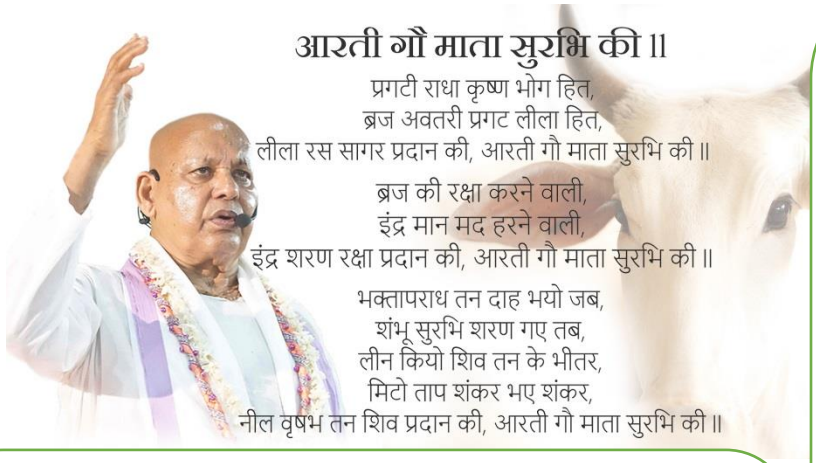

|| राधे किशोरी दया करो ||

हमसे दीन न कोई जग में, बान दया की तनक ढरो |
सदा ढरी दीनन पै श्यामा, यह विश्वास जो मनहि खरो |
विषम विषयविष ज्वालमाल में, विविध ताप तापनि जु जरो |
दीनन हित अवतरी जगत में, दीनपालिनी हिय विचरो |
दास तुम्हारो आस और की, हरो विमुख गति को झगरो |
कबहँ तो करुणा करोगी श्यामा. यही आस ते द्वार परयो ।

अनुक्रमणिका

विषय-सूची — पृष्ठ-संख्या

०१. गोपाल की गौ-प्रेमलीला.....०३
०२. गौवंश की संवृद्धि का आधार 'आराधना'.....०५
०३. सच्चे गौ-सेवक 'गोपालजी'.....०८
०४. सर्वमंगलकारिणी 'नारी-शक्ति'.....१०
०५. सहज स्नेह का स्वरूप 'निःस्वार्थ सेवा' १२
०६ गौ-सेवानिष्ठ ही वास्तविक ब्रजवासी.....१६
०७. गौसेवक-संगठन से ही होगा गौवंश का संरक्षण.....१९
०८. प्राणीमात्र की परमहितकारी 'गाय'.....२३
०९. कनाडा के इन्टरव्यू में हुआ व्यासाचार्या मुरलिकाजी का जाग्रतकारी आध्यात्मिक उद्बोधन.....२७
१०. भक्तियुक्त-शिक्षा से ही सनातन संस्कृति का संपोषण सम्भव.....३१

संरक्षक- श्रीराधामानबिहारीलाल

प्रकाशक – राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर सेवा संस्थान, गह्वरवन , बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)

(Website :www.maanmandir.org) (E-mail :ms@maanmandir.org)

mob. : 9927338666, 9837679558

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप बाबाश्री के प्रातःकालीन सत्संग का ८ से ९ बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ७:३० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं |

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें | हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है –

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ | जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ||

(श्रीमद्भागवत३/७/४१)

अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंशके बराबर भी नहीं हो सकता |

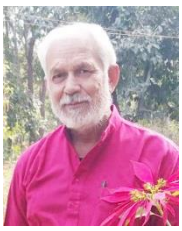

प्रकाशकीय

जीव की क्या विवशता है कि वह देवदुर्लभ मानव-देह पाकर एवं सत्पुरुषों की सन्निधि पाकर भी बार-बार यमयातनाओं की प्राप्ति के साधनों का ही चयन करता है? कृपाकातर करुणावरुणायल श्रीहरि एवं उनके अनन्य दास सत्पुरुषों की भी यही व्यथा रहती है कि कैसे ऐसे जीवों को कल्याणपथ पर आरूढ़ कराया जाय | भगवदावतार संत प्रवर निरन्तर अपनी वाणी से व अपनी क्रियात्मक जीवन शैली से सत्प्रयासरत देखे जाते हैं | मानमन्दिर सेवा संस्थान गह्वरवन बरसाना स्थित श्रीमाताजी गौशाला में आयोजित गौ-महामहोत्सव के अवसर पर पंचदिवसीय कार्यक्रम में ब्रज-वृन्दावन की कई विभूतियों सहित ब्रज के विरक्त संत पूज्यपाद श्रीरमेश बाबा ने जीव के कल्याण एवं धर्मार्थ, काममोक्ष की प्राप्ति का एकमात्र साधन यही बताया कि जब तक हमारा आश्रय श्री हरि के पादपद्मों व महत्पुरुषों की सन्निधि तथा सतत् साधना में नहीं है, वह सदा ईश्वर विमुख बनकर महाविनाश का ही शिकार बनता रहेगा | विविध वासनाओं का अँधा प्राणी महापुरुषों की कृपा-वर्षा से दूर रहकर मलभोजी शूकर-कूकरों की भाँति जीवन-यापन करता रहता है | विवेकशून्य प्राणी इतना ज्ञानशून्य हो जाता है कि वह पशुता और मनुष्यता में अंतर ही नहीं कर पाता है | शूकर जैसे मलभोजी है, वैसे ही मनुष्य भी अपनी ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों से वही आहार ही तो कर रहा है; ऐसा अन्धा प्राणी उसी तरह भोगों में डूबा रहता है जैसे मलमूत्र के जीवाणु निरन्तर मलमूत्र में पड़े हुए मिथ्या सुख की अनुभूति किया करते हैं, यहाँ तक कि उस मल-मूत्र के बिना वे जीवित भी नहीं रह पाते हैं; ऐसी स्थिति में उन जीवों और मनुष्यों में क्या अन्तर है ?

त्वङ्मांसरुधिरस्नायुमेदोमज्जास्थिसंहतौ ।

विण्मूत्रपूये रमतां कृमीणां कियदन्तरम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी ११/२६/२१)

मनुष्य या अन्य जीवों को यथा भोग प्रिय हैं, उन भोगों के बिना उनका जीवन सम्भव नहीं होता, यह उन प्राणियों की कामकातरता है | परन्तु यह कातरता भगवान् एवं उनके भक्तों में भी देखी जाती है | भगवान् या भगवद्भक्त अपनी करुणाकातरता के बिना नहीं रह पाते | भगवदावतार का कारण भी यही है कि वे किसी न किसी रूप में अवतरित होकर जीव-कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं | ब्रज के परम विरक्त संत श्रद्धेय श्रीबाबामहाराज का एक- एक क्षण ऐसे ही परहित में व्यतीत होता है | उनकी कृपा-सन्निधि में माया का प्रवेश तक नहीं है | जिनकी करुणामयी सन्निधि में निरन्तर भगवदाराधन व सेवापरायणपूर्वक अनेक जीव लगे हुए हैं जो न केवल आत्मकल्याण तक सीमित हैं अपितु लोककल्याण में सतत् निरत हैं | पंचदिवसीय गौ-महामहोत्सव भी उसी का एक अंग रहा | महापुरुषों की ऐसी अहैतुकी कृपा के बिना जीव का कल्याण कभी सम्भव नहीं है |

राधाकांत शास्त्री

व्यवस्थापक, मानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

गोपाल की गौ-प्रेमलीला

श्रीबाबामहाराज द्वारा गौ-महामहोत्सव में कथित सत्संग (५/१/२०१९) से संग्रहीत

(संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी चन्द्रमुखी जी, मानमंदिर, बरसाना)

श्रीबाबामहाराज के शब्दों में – देखो भाई ! कुछ बात हम ऐसी कहेंगे, जो सुनने में तो कड़वी लगती है किन्तु क्या करें हमको जैसा बोलना आता है, वैसा ही बोलेंगे | आज समाज में चारों ओर दुर्विषह क्रोध छाया हुआ है और इसे हम लोगों (आजकल के संकीर्ण विचार वाले साधु-वैष्णवों) ने फैलाया है | श्रीभगवान् ने उद्धवजी से कहा है –

विषयेषु गुणाध्यासात् पुंसः सङ्गस्ततो भवेत् ।
सङ्गात्तत्र भवेत् कामः कामादेव कलिर्नृणाम् ॥
कलेर्दुर्विषहः क्रोधस्तमस्तमनुवर्तते ।
तमसा ग्रस्यते पुंसश्चेतना व्यापिनी द्रुतम् ॥
तया विरहितः साधो जन्तुः शून्याय कल्पते ।
ततोऽस्य स्वार्थविभ्रंशो मूर्च्छितस्य मृतस्य च ॥

(श्रीमद्भागवतजी ११/२१/१९,२०,२१)

काम से कलियुग फैलता है | कलियुग से दुर्विषह क्रोध उत्पन्न होता है और भीषण तम (अन्धकार) छा जाता है | आज समाज में चारों ओर इस दुर्विषह क्रोध के कारण ऐसा अन्धकार छा गया है कि इसने मनुष्य की चेतना को पूरी तरह से ढक दिया है | दुर्विषह क्रोध जब मनुष्य के अन्तःकरण में पैदा हो जाता है तब फिर वह किसी की बात ही नहीं सुनता, कल्याण की बात को सुनना ही नहीं चाहता | उदाहरण के लिए श्रीरामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड में वर्णन है कि हनुमानजी जब लंका गए तो उन्होंने रावण से कहा कि हे रावण ! मैं तुझसे हाथ जोड़कर कहता हूँ कि तू मेरी विनती मान ले | किन्तु उसके अन्दर ऐसा दुर्विषह क्रोध था कि वह रामजी का नाम तक उच्चारण नहीं करता था, तपसी कहता था और उसे राम का नाम सुनना भी पसंद नहीं था | यद्यपि हनुमानजी ने उससे कहा कि तेरे इष्ट शंकर भगवान् हैं परन्तु हजारों शिव, विष्णु और ब्रह्मा भी राम से द्रोह करने वाले की रक्षा नहीं कर सकते और ऐसा ही हुआ | सभी जानते हैं कि रावण का क्या हाल हुआ | वस्तुतः भागवत के उपरोक्त श्लोक के अनुसार क्रोध के अन्धकार से मनुष्य चेतना शून्य हो जाता है, किसी की शिक्षा ही नहीं मानता, कल्याणकारी बात क्या है, उसे मनुष्य मानता ही नहीं है | उसी तरह आज समाज में विषमताओं ने इतना बड़ा घर कर रखा है कि आचार्यों, संत-महापुरुषों की कोई बात ही नहीं सुनना चाहता है, इसका कारण है कि दुर्विषह क्रोध इतना अधिक फैला हुआ है, मिथ्यावादी लोग अपनी सत्ता (अहंता) की स्थापना करने में लगे हुए हैं; जबकि भगवान् सर्वशक्तिमान होते हुए भी अपने बड़प्पन को भूलकर भक्तजनों के प्रेमाधीन हो जाते हैं | वस्तुतः अहंकार को छोड़ने के बाद ही सच्ची सेवा होती है |

भगवान् की भगवत्ता क्या है –

एवं निगूढात्मगतिः स्वमायया, गोपात्मजत्वं चरितैर्विडम्बयन् ।
रेमे रमालालितपादपल्लवो, ग्राम्यैः समं ग्राम्यवदीशचेष्टितः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/१५/१९)

भगवान् अपने को कितना छिपा सकते हैं, यह माधुर्य है | मैं भगवान् हूँ, अनन्त ऐश्वर्य का स्वामी हूँ, इसको भगवान् कितना अधिक छिपाते हैं, यही माधुर्य है, रस का माधुर्य है | उपरोक्त श्लोक में शुकदेव जी कहते हैं कि ये कौन-से भगवान् हैं ? ये वे भगवान् हैं जिनके चरणकमलों की आराधना लक्ष्मीजी निरंतर करती रहती हैं | वे आज ब्रज में गँवार बन गये हैं और उनकी चेष्टा देखो, गँवार बनकर ग्वारियाओं अर्थात् ग्रामीण बालकों के साथ खेल रहे हैं और उनकी जूठन को खा रहे हैं, उनके घोड़ा बनते हैं, उनको कंधे पर बिठाते हैं; यही है ब्रज का अथवा रस का माधुर्य, इसी माधुर्य को ब्रज के सभी रसिकों ने गाया है, श्रृंगार रस में भी गाया है, सख्य रस

में भी गान किया है | श्रृंगार रस का उदाहरण है –**"ललन को नचवन सिखवत प्यारी |"** श्रृंगाररस में श्यामसुंदर इतने अज्ञानी बन गये हैं कि नृत्यकला सीख रहे हैं और गोपियाँ उन्हें सिखाती हैं | इसी माधुर्य को अन्यत्र भी गाया गया है | **"मोहि कहत युवती सब चोर |"** सूरदासजी ने गाया कि कन्हैया यशोदा मैया से कहते हैं - माँ ! सब ब्रजयुवतियाँ मुझको चोर कहती हैं | **"खेलत रहौं कतौं मैं बाहर, चितै रहत सब मेरी ओर |"** तेरे सामने तो ये सब उलाहना देती हैं लेकिन मैं बाहर जहाँ भी जाता हूँ तो एकटक ये मेरी ओर देखती रहती हैं | **"बोलि लेत भीतर घर अपने, मुख चूमति भर लेति अंकोर |"** मेरा मुख चूमती हैं, आलिंगन करती हैं और घर में माखन ढूँढ़कर स्वयं अपने हाथों से मुझे खिलाती हैं तथा हाथ जोड़कर ब्रह्माजी से कुछ माँगती हैं | तेरी सौगंध है मैया, ये मुझे बुलाती हैं तो मैं इनके पास जाता नहीं हूँ, चोरी तो बहुत आगे की चीज है | यशोदाजी कन्हैया की बात सुनकर प्रसन्न हो गयीं | "**सूर स्याम हँसि कण्ठ लगायो, वे तरुणी कहाँ बालक हौं |"** यह माधुर्य है | यशोदा जी को अपने लाला की चोरी का कलंक सुनकर कष्ट होता है | फिर यशोदाजी कान्हा से कहती हैं - **"यशुमति कहति कान्ह सुन मेरे, अपनेहि आँगन तुम खेलो |"** लाला, तू अपने ही आँगन में खेल | **"बोलि लेव सखा सब संग के, मेरे कह्यो करौं जनि तेरो |"** गोपियाँ तुझे चोर कहती हैं, उस लज्जा से मेरे मन में संकोच होता है | मुझसे दाऊ ने आज कहा कि तू रूठ जाता है, चोर शब्द तुझे अच्छा नहीं लगता, फिर भी तेरा नाम चोरी का लगाती हैं | गोपियों के उलाहना देने के कारण मुझे इतना कष्ट होता है कि एक नौकर की तरह मैं तुझे बाँध देती हूँ | सब गोपियाँ हँसती हैं कि मैया ने भी चोर नाम लिया; यह माधुर्य है | श्रृंगार रस में गोपियाँ 'गोविन्द' को कुहक या कितव (कपटी) कहती हैं, यह माधुर्य है; लेकिन कृष्णलीलाओं में जो माधुर्य है, उसको लोग सुनना ही नहीं पसंद करते क्योंकि उनमें दुर्विषह क्रोध होता है | श्रीश्यामसुन्दर की माधुर्यलीला का एक दृश्य देखें - श्रीकृष्ण गैया दुहना नहीं जानते हैं लेकिन जब ग्वालिनी बैठकर गाय दुहती है अथवा श्रीजी दोहन करती हैं तो श्यामसुंदर वहाँ जाकर बैठ जाते हैं | **"धेनु दुहत हरि देखत ग्वालिन |"** श्यामसुंदर ललचायी आँखों से देखते हैं कि मुझको भी गाय दुहने का अवसर मिल जाए | (यह पद गायों की महिमा की दृष्टि से कह रहे हैं |) **"आपुन बैठ गये तिनके संग, सिखवत दोहि कहे गोपालन |"** कृष्ण बैठ गये और गोपी से बोले – "मुझे भी गाय दुहना सिखाओ |" गोपी ने कहा – "कल सिखाऊँगी, अब तो मैंने सभी गायों को दुह लिया है |" **"भोरि दुहौं जब नन्द दुहाऊ",** नन्दबाबा की सौगंध है, कल सुबह गाय दुहना सिखाऊँगी | **"मोते कहत सुनाय बड़ो भयो अब दुहत न ह्वैहौं | अपनी धेनु निवेरी सूरदास प्रभु कहत सौंह देहु || मैं दुह्यों मोहि दुहन सिखावहु |"** श्यामसुंदर गोपी से कहते हैं कि मुझे गाय दुहना सिखा दो | **"कैसे धार दूध की बारत, सोइ-सोई विधि तुम मोहि बतावहु ||"** दुहते समय दूध की धार से घर्र-घर्र की ध्वनि होती है | श्यामसुंदर गोपी से कह रहे हैं कि दूध की धार कैसे बजकर ध्वनि करती है, यह तुम मुझे सिखाओ | "**कैसे दुहत दोहनी दोहन, कैसे बछरा थनहि लगावहु |"** कैसे तुम घुटनों के बीच में दोहनी रख लेती हो और कैसे बछड़ा को गाय के थन से लगा देती हो | **"कैसे लै लोई पद बाँधत, कैसे ले पग या अटकावहु |"** लोई कहते हैं उस रस्सी को जो दूध दुहते समय गाय के पैर में बाँधी जाती है | श्यामसुंदर गोपी से कहते हैं कि मुझे भी लोई बाँधना सिखाओ | **"सूर श्याम सों कहत ग्वाल सब, धेनु दुहन तातहि उठवावहु |"** श्रीकृष्ण की गायों के सम्बन्ध में यह एक छोटी-सी 'माधुर्यरसमय गौ-प्रेमलीला' है, जिससे पता लगता है कि गोपालजी का गायों से असीम स्नेह है; इसे इसलिए सुनाया क्योंकि गायों के द्वारा आज सारे देश की रक्षा हो सकती है | यदि सभी लोग गौ-सेवा के बारे में सोच लें तो देश की रक्षा के लिए फ़ौज (सेना) रखने की और अस्त्र-शस्त्र बनाने की कोई जरूरत नहीं है |

गौवंश की संवृद्धि का आधार 'आराधना'

श्रीबाबामहाराज द्वारा गौमहोत्सव में कथित सत्संग (५/१/२०१९) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी माधुरी जी, मानमंदिर, बरसाना

बाबाश्री के शब्दों में – ब्रज में श्रीकृष्ण ने असुरों को मारने के लिए कोई हथियार नहीं उठाया | पूतना का स्तन पीकर उसे मार दिया, शकटासुर को पाँवों की ठोकर से मार दिया, कालियनाग का दमन नाचकर किया | कहीं भी दुष्टों, असुरों का दमन करने हेतु उन्होंने अस्त्र नहीं छुये | गौसेवा से देश सशक्त और समृद्ध हो जायेगा | कोई आवश्यकता नहीं है हमारे देश को अस्त्रों की होड़ करने की, किन्तु गौसेवा होनी चाहिए | कैसे गौसेवा करनी चाहिए, यह भगवान् कृष्ण ने बताया है | यशोदा मैया ने कन्हैया से कहा – "लाला, गायें चराने वन में जाता है तो पाँव में पनहिया पहन ले, सिर पर छतरी लगा ले | नंगे पाँव तू तो जंगल में गाये चराने जाता है |" कन्हैया ने माँ की बात मानने से मना कर दिया और बोले – "माँ, यह गौपालन की रीति नहीं है |"

वास्तव में आज संसार में एक भी गौपालक नहीं है | यह कड़वी बात जरूर लगती है किन्तु करें क्या, हमको कहना पड़ता है | आप लोग स्वयं विचार करें, श्रीकृष्ण ने माता से कहा कि मैया हमारा धर्म है - गौपालन, इस धर्म का हम जितनी दृढ़ता से पालन करेंगे, उतना ही हमारी रक्षा होगी | न तो कोई असुर हमारी हानि कर सकता है और न ही कंस हमारा कुछ बिगाड़ पायेगा, यही हुआ ब्रज में | कोई असुर ब्रजवासियों का अहित नहीं कर पाया | श्रीकृष्ण ने मैया से कहा कि जैसे गायें रहती हैं, उसी प्रकार उनके सेवक-ग्वारियाओं को भी रहना चाहिए |

यदि गौसेवा रूपी धर्म का पालन किया जाए तो आयु अपने आप बढ़ती है, काल क्या चीज है | गौ-सेवा से मनुष्य का यश भी बढ़ता है | यदि हम गौसेवा रूपी धर्म की रक्षा करेंगे तो यह धर्म हम सबकी रक्षा करेगा | इसलिए कृष्णलीलाकाल में ब्रज में चमत्कार था क्योंकि कंस द्वारा ब्रज के नाश हेतु भेजे गये असुर रावण से भी अधिक शक्तिशाली थे किन्तु वे ब्रज का कुछ भी नाश नहीं कर सके, इसका कारण यही था कि ब्रज में गौपालन होता था | कंस के समय में ब्रज में रक्षा के लिए कोई फ़ौज या सेना नहीं थी, रक्षा का कोई अन्य साधन नहीं था | शरीर की रक्षा के लिए कवच आदि नहीं थे, केवल सभी ब्रजवासी गौपालन किया करते थे और उससे सारा देश शक्तिपूर्ण बन गया | एक उदाहरण है - पांडवों का | जब पाण्डव जन अज्ञातवास में गुप्त रूप से विराटनगर में रह रहे थे और कौरवों को उनकी जानकारी नहीं मिल पा रही थी, उस समय दुर्योधन परेशान होकर भीष्म पितामह के पास गया और पूछा - "पितामह ! इस समय पाण्डव कहाँ हैं ? अगर उनका पता पड़ जायेगा तो उन्हें फिर से १२ वर्ष के लिए जंगल में जाना पड़ेगा | आप सत्यवादी हैं, आप जो भी कहोगे, सत्य कहोगे | भीष्मजी बोले – "बेटा, पाण्डव भक्त हैं, वे इस समय अज्ञातवास कर रहे हैं, किसी को अपने बारे में पता नहीं होने देते, ऐसी स्थिति में मैं क्या बताऊँ कि वे कहाँ हैं ?" दुर्योधन बोला – "दादा जी ! आप अनुमान प्रमाण के आधार पर, अंदाज से तो बता सकते हैं कि वे कहाँ होंगे ?" भीष्मजी बोले – "हाँ, जिस देश में गायों की बहुत वृद्धि हो रही हो और वे गायें कमजोर नहीं हों | ऐसी गायें जिनका दूध, दही और घी रसीला है, हितकारी है, देश को पुष्ट करने वाला है, ऐसी गायें जहाँ संवृद्धि को प्राप्त हो रही हैं, अवश्य ही पाण्डव वहीं होंगे |" (आज हमलोग गौशाला में गायों को रख लेते हैं किन्तु उनके पर्याप्त पालन-पोषण की पूर्ति नहीं कर पाते हैं |) भीष्मजी

ने अपने कथन में गायों की जो विशेषता बतायी, उसको हमलोग मानते हैं, सरकार यदि इसे नहीं मानती है तो न माने क्योंकि सरकार इन सब चीजों का महत्व नहीं जान सकती | च्यवन ऋषि ने १२ वर्ष तक समुद्र के गहरे तल में बैठकर तपस्या की थी | उस समय नहुषजी चक्रवर्ती सम्राट थे | उनके सामने एक मुकदमा आया | घटना यह है कि एकबार समुद्र में मछुआरों ने बड़ा जाल फेंका और उस जाल में मछलियों के साथ च्यवन ऋषि भी आ गये | जब जाल को बाहर खींचा गया और उसमें च्यवन ऋषि को सबने देखा तो सब ओर हल्ला मच गया | सभी लोग कहने लगे कि ये तो च्यवन ऋषि हैं | च्यवन ऋषि ने मछुआरों से कहा – "तुम मुझे छोड़ते हो लेकिन मैं अकेले नहीं छूटूँगा क्योंकि मेरे साथ इतनी सारी मछलियाँ भी पकड़ी गई हैं, पहले इन मछलियों को मुक्त करो तब मैं जाऊँगा |" राजा नहुष आये तो च्यवन ऋषि ने कहा कि हमारे बराबर मूल्य इन मछुआरों को दे दो | बहुत से ऋषि इकट्ठे हो गये, किसी ने कहा कि इन्हें आधा राज्य दे दिया जाये, किसी ने करोड़ों स्वर्ण मुद्रा देने की बात कही लेकिन च्यवनऋषिजी मना करते गये, उन्होंने कहा कि यह मेरा मूल्य नहीं है; चाहे तुम सारे संसार का स्वर्ण दे दो तब भी वह मेरा मूल्य नहीं है | इसके बाद फिर बढ़ाते-बढ़ाते यहाँ तक कहा गया कि आप सारे संसार का राज्य ले लो | नहुषजी चक्रवर्ती सम्राट थे अतः सर्वस्व अर्पित करने को वह तैयार थे किन्तु च्यवनजी बोले कि सारे संसार का राज्य भी मेरा मूल्य नहीं है, मेरा उचित मूल्य दो और मुझे छोड़ो और उसके बाद सब मछलियों को भी छोड़ो तब मैं जाऊँगा | यह बहुत बड़ी समस्या थी और इसका कोई हल नहीं था | उसी समय ऋषियों के बीच से एक दुर्बल ब्राह्मण निकला और उसने पूछा कि यहाँ इतनी भीड़ कैसे जमा है | लोगों ने कहा कि च्यवनऋषि के मूल्य का फैसला नहीं हो पा रहा है | ब्राह्मण ने कहा – "इसका फैसला मैं करता हूँ |" सब देखने लगे कि जिस समस्या को बड़े-बड़े ऋषि नहीं सुलझा सके, उस समस्या को सुलझाने का दावा यह दुर्बल ब्राह्मण कैसे कर रहा है ? उस ब्राह्मण ने एक गाय लाकर च्यवन ऋषि के सामने रख दी और बोला – "च्यवन जी ! यह गाय आपका मूल्य है कि नहीं |" च्यवनजी बोले – "अरे, यह मुझसे ज्यादा है, बहुत ज्यादा है |" इस तरह च्यवन जी एक गाय से ही संतुष्ट हो गये और वहाँ से चले गये | उस समय वहाँ च्यवन ऋषि ने कहा था –

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम् ।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति ॥

(महाभारत, अनुशासनपर्व ५१/३२)

इस एक ही श्लोक में महर्षि ने गौ-महिमा की अत्यन्त महत्वपूर्ण बात कही है कि जिस देश में गौवंश निर्भय है, कहीं भी विचरण करने पर उनको किसी प्रकार का कोई खतरा नहीं है, जहाँ गायें निर्भय विचरण करती हैं, वह देश विराजित होता है अर्थात् सब प्रकार से संपन्न होता है और अगर उस देश में कोई पाप होता है तो उस सम्पूर्ण पाप को गौमाता सोख लेती है, नष्ट कर देती है | इसलिए मैं समझता हूँ कि पाप से देश दुर्बल होता है और गौ-सेवा से पुष्ट होता है | आज कहीं भी गौसेवा नहीं हो रही है | बात बहुत कड़वी है, ऐसा प्रतीत होता है कि सब पर हम आक्षेप कर रहे हैं लेकिन यह आक्षेप की बात बात नहीं है अपितु बड़े प्रेम की बात है | हमलोगों ने गौशाला खोला, हमने क्या खोला? ठाकुर जी ने खुलवा दिया | श्रीमाताजी गौशाला को प्रभु ही चला रहा है, इसको चलाने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है, एक पैसा की सामर्थ्य मुझमें नहीं है | हम अपना ही पेट नहीं भर सकते हैं तो भला गौमाता को क्या खिलायेंगे ? हमारे मानगढ़ में जितने भी संत रहते हैं, सब मधुकरी माँगते हैं | पेट भरने को ही हमारे पास कुछ नहीं है तो फिर गौ-सेवा क्या करेंगे लेकिन गौशाला में जो कुछ भी गौ-सेवा हो

रही है, वह प्रभु करा रहा है | यह सामर्थ्य प्रभु दे रहा है, क्यों दे रहा है, इसका भी एक कारण है और वह कारण यह है कि हमारे यहाँ **'निष्काम आराधना'** होती है | 'आराधना' कोई बाहर के पंडितजी नहीं करते हैं, उस आराधना में लड़कियाँ नृत्य करती हैं | हमारा ऐसा विश्वास है कि यदि भगवान् के सामने नृत्य किया जाये तो करोड़ों कल्पों के पाप नष्ट हो जाते हैं –

यो हि नृत्यति प्रहृष्टात्मा भावैर्बहु सुभक्तितः ।
स निर्दहति पापानि कल्पान्तर शतेश्वपि ॥

(स्कन्दपुराण- ७/४/२३/७४)

यद्यपि इस नृत्याराधना की लोगों ने बहुत आलोचना किया लेकिन श्रीजी की कृपा थी कि आलोचना से कुछ नहीं हुआ और आराधना चलती रही | एक बात और बता दें कि मुझे पुनर्जन्म मिला लड़कियों की उपासना-शक्ति से | paralysis 'लकवा' का ऐसा रोग आया कि मैं बिस्तर पर करवट नहीं बदल सकता था, खड़ा नहीं हो सकता था | मानमंदिर की दिव्य कन्याओं (आराधिकाओं) ने अपने-अपने ढंग से मेरे स्वस्थ्य होने के लिए आराधना की, क्योंकि इनका हमसे शुद्ध प्रेम है | यदि प्रेम में अशुद्धि हो जायेगी तो सब चमत्कार समाप्त हो जायेगा | इन बालिकाओं ने मेरे रोगमुक्त होने के लिए उपासना किया और मैं बिल्कुल ठीक हो गया | मुझे विश्वास है कि थोड़े दिनों में मैं अच्छी तरह से चलने लग जाऊँगा | कन्याओं में वह शक्ति है कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता; ये मेरा छोटा-सा अनुभव है | यदि कन्याओं का विशुद्ध भाव से सेवन किया जाये तो वह सैकड़ों गायों की सेवा के बराबर है | यहाँ गौ-महामहोत्सव में बड़े-बड़े महात्मा उपस्थित हैं, आप सब लोग आशीर्वाद दीजिये कि मेरे द्वारा गौ-सेवा शुरू हो जाए, अभी तो मैं (गौ-सेवा की) प्रारम्भिक अवस्था में भी नहीं हूँ | श्रीराजेन्द्रदास जी महाराज और गुरुशरणानन्द जी महाराज मुझसे मिलने मानमंदिर आये तो मैंने उनसे कहा कि मेरा शरीर कथा (श्रीमाताजी गौशाला के गौभक्ति महोत्सव) में आने लायक तो नहीं है लेकिन आप लोगों के लिए मैं अवश्य ही आऊँगा क्योंकि आपलोग ब्रज की विभूति हैं | श्रीराजेंद्रदास जी महाराज गौभक्त हैं, जहाँ-जहाँ भी इनकी कथा होती है, वहाँ ये 'माताजी गौशाला' की चर्चा करते हैं | गुरुशरणानन्द जी महाराज की साधना स्थली रमणरेती के हम आजन्म ऋणी रहेंगे क्योंकि ब्रज चौरासी कोस की यात्रा प्रथम बार मैंने इनके गुरुदेव श्रीहरिनामदासजी महाराज के साथ की थी और कई बार उनके साथ ब्रजयात्रा की और उन्हीं से हमको ब्रजचौरासी कोस की परिक्रमा की प्रेरणा मिली | एक प्रकार से देखा जाये तो रमणरेती मेरा गुरुस्थान है | इन दोनों महान संतों (गुरुशरणानन्द जी महाराज व श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज) ने भारतवर्ष की बहुत बड़ी सेवा की है | देश की आध्यात्मिक संस्कृति की रक्षा करने के लिए ही भगवान् व संतजन अवतार लेते हैं –**बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।**
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥

(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड - १९२)

भक्ति में बहुत मेहनत करने की जरूरत नहीं है। लोग योग करते हैं, यज्ञ करते हैं, जप करते हैं, उपवास करते हैं, निर्जला व्रत करते हैं लेकिन भक्ति लेशमात्र भी नहीं आती क्योंकि स्वभाव में कुटिलता है, सरलता नहीं है |

*** गौ-सेवकों की जिज्ञासा ***
श्रीमाताजी गौशाला का बैंक खाता दिया जा रहा है :-
SHRI MATAJI GAUSHALA
915010000494364

सच्चे गौ-सेवक 'गोपालजी'

श्रीबाबामहाराज के गौमहोत्सव-सत्संग (५/१/२०१९) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका बालव्यासाचार्या गौरी जी, मानमंदिर, बरसाना

संत लोग ही देश के रक्षक हैं लेकिन जब दुर्विषह क्रोध आ जाता है तब मनुष्य इस बात को भूल जाता है | देश की रक्षा कैसे हुई, यह भक्तमाल में लिखा है, ऐसा नहीं कि मैं अपने मन से कह रहा हूँ | भक्तमाल में उल्लेख है कि संतों-ब्राह्मणों ने गोस्वामी तुलसीदासजी को पत्र लिखा था कि महाराज ! यदि देश ही नष्ट हो जायेगा तब फिर आप क्या करेंगे, इसलिए आप देश को बचाइये | यवनों (मुसलमानों) का आक्रमण ऐसा है कि इसने हमारे देश के धर्म (सनातन धर्म) को नष्ट किया है | संतों और ब्राह्मणों की इस प्रार्थना पर गोस्वामी तुलसीदासजी दिल्ली गये | इस बात का भक्तमाल में प्रियादासजी ने उल्लेख किया है, ऐसा नहीं है कि मैं अपनी ओर से कोई मनगढ़ंत बात कह रहा हूँ | जब गोस्वामी जी दिल्ली पहुँचे तो अकबर ने उनका सम्मान किया और कहा – "महाराज ! मैंने ऐसा सुना है कि आपने एक मृतक ब्राह्मण को जीवित कर दिया, एक लड़की को लड़का बना दिया तो मुझे भी आप कुछ चमत्कार दिखाइये |" गोस्वामीजी बोले – "मैं चमत्कारी नहीं हूँ, न मुझमें कोई शक्ति है |" अकबर बोला – "शक्ति आपमें है कि नहीं, मैं यह नहीं पूछ रहा हूँ लेकिन इतना अवश्य है कि जब तक आप चमत्कार नहीं दिखाओगे तब तक दिल्ली से आप बाहर नहीं जा सकते | आप कारागार में बंद रहोगे |" ऐसा कहकर अकबर ने गोस्वामी तुलसीदासजी को कारागार में बंद कर दिया | कारागार में गोस्वामीजी ने हनुमानजी का ध्यान किया | थोड़ी ही देर में करोड़ों बंदर आ गए और अकबर की पाँच हजार रानियों के वस्त्र फाड़ने लगे | अकबर ने इन अगणित बंदरों से रक्षा के लिए अपनी विशाल सेना को नियुक्त कर दिया किन्तु सेना क्या करती, एक-एक सैनिक पर दस-दस बन्दर टूट पड़े, सेना परास्त हो गयी और निराश होकर अंत में अकबर गोस्वामीजी की शरण में आया और बोला कि बंदरों के आतंक से दिल्ली की रक्षा नहीं हो सकती है | नागरिकों को बन्दर परेशान करने लगे | अकबर ने गोस्वामीजी से प्रार्थना की – "महाराज ! आप कृपा कर दीजिये, चमत्कार तो मैंने देख लिया | ऐसी दया अब कीजिये कि दिल्ली की रक्षा हो जाये |" गोस्वामी जी ने अकबर से कहा – "एक काम करो, अब तुम्हारे किले में हनुमानजी का प्रवेश हो गया है, दूसरा किला बनाओ तब तुम बचोगे |" गोस्वामीजी की इस आज्ञा का अकबर ने पालन किया तब वह बच पाया | भक्तमाल में वर्णन है कि संतों-भक्तों द्वारा ऐसे बहुत से चमत्कार हुए और इस देश को संतों ने बचाया है | मथुरा में कील्हदेव जी के चमत्कार की घटना का भक्तमाल में उल्लेख हैं, इसी प्रकार जगद्गुरु स्वामी रामानंदजी ने भी जगह-जगह चमत्कार दिखाया, सुदर्शनावतार केशवाचार्य जी ने भी चमत्कार प्रदर्शित किया | इस तरह संत लोग ही इस देश के रक्षक हुए हैं और संतगण ही गौ-सेवा करके देश को बचाते हैं परन्तु गौसेवा अभी हम लोगों से हो नहीं पाती है क्योंकि भगवान् कृष्ण ने इस बात को स्वयं यशोदा माँ से कहा – "मैया ! तू मुझसे कहती है कि गौचारण के लिए जाते समय जूती पहन ले, छत्र लगा ले लेकिन –

गोपालनं स्वधर्म्मो नस्तास्तु निश्छत्र-पादुकाः ।

छतरी लगाकर और पनहिया (जूती) पहनकर गौ-सेवा नहीं होती है |

यथा गावस्तथा गोपास्तर्हि धर्म्मः सुनिर्म्मलः ॥

(गोविन्दलीलामृत, पंचमसर्ग २८)

आशा इधर-उधर गयी और भक्ति नष्ट हो गई ।

जैसे गाय रहती है उसी प्रकार ग्वारिया को भी रहना चाहिए, इस प्रकार की गौसेवा से क्या होता है ?

धर्मादायुर्यशो वृद्धिर्धर्म्मो रक्षति रक्षितः ।
स कथं त्यज्यते मातर्भीषु धर्म्मोऽस्ति रक्षिता ॥

(गोविन्दलीलामृत, पंचमसर्ग २९)

अपने आप यश बढ़ता है, स्वयमेव ही आयु बढ़ती है | मैया हमलोग डरपोक हैं, जो ऐसी बातें करते हैं कि छत्र और पनहियाँ धारण करके गौचारण करना चाहिए | पहले भारतवर्ष में राजा लोग गायें रखते थे और उन गायों की सेवा स्वयं नहीं करते थे, गौ-सेवा हेतु नौकर-चाकरों का अलग विभाग रखते थे | अगर भगवान् की कृपा से कोई ऐसा योद्धा देश में प्रकट हो जाये जो गौ-पालन करे, गौ-सेवा करे तो आज सहज ही देश की रक्षा हो जाएगी, कोई आवश्यकता नहीं है एटम बम (परमाणु बम) बनाने की | कंस के समय में ब्रज की रक्षा करने का किसी ने क्या प्रयत्न नहीं किया था ? कंस के विरुद्ध शक्ति प्रयोग करने का प्रयत्न नहीं किया जा सकता था | (केवल ब्रजवासियों द्वारा भगवान् कृष्ण के नेतृत्व में आदर्श गौसेवा किये जाने के कारण ही कंस द्वारा भेजे गये भयानक असुरों से ब्रज की रक्षा हुई) | दुःख की बात यह है कि कृष्णावतार के बाद भारत में अभी तक उनके जैसा गौ-सेवक कोई नहीं हुआ | कृष्ण कैसे गौ-सेवक थे ? उनके बारे में गोपियों ने स्वयं कहा –

चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून्नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः, कलिलतां मनः कान्त गच्छति ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/३१/११)

इतने सुन्दर तुम्हारे चरण हैं कि कमल से भी अधिक कोमल हैं, जिन चरणों को हम अपने स्तनों पर धारण करने में भी डरती हैं | हमारे स्तन अत्यंत कठोर हैं –

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु, भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु ।
तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित्कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/३१/१९)

हम भय के साथ तुम्हारे कमल से भी अधिक कोमल चरणों को अपने कठोर स्तनों पर धारण करती हैं | ऐसे कोमल चरणों से तुम जंगलों में घूमते हो, क्या तुमको व्यथा नहीं होती है ? तुम हमारी आयु हो और हम तुम्हारी आयु हैं | तुम्हारे कष्ट के कारण हमें धैर्य नहीं है | श्रीकृष्ण द्वारा ऐसी आदर्श गौ-सेवा करने के कारण ही मैंने कहा कि उनके जैसा गौसेवक तो आजतक विश्व में कोई हुआ ही नहीं | भगवान् कृष्ण के बाद इतिहास को देखा जाए तो ऐसी गौसेवा कहीं देखने को नहीं मिलती | केवल गायों को रख लेना, उनको भूसा-चारा दे देना, यह तो एक छोटी-सी बात है | स्वयं गौचारण करना यह आजकल असंभव है और जो कुछ भी गौपालन हम लोग करते हैं, उसमें बचत कर लेते हैं, समाज में यह पाप हो रहा है | 'गौशाला का चंदा' के नाम से आजकल स्वयं के लिए धन संग्रह किया जाता है और आश्रमों का निर्माण किया जाता है | इसलिए मैंने कुछ कड़े शब्द कहे, सब लोग इसे क्षमा कीजिये | वास्तव में कृष्णावतार के बाद से अभी तक कोई गौ-सेवक हुआ नहीं |

जिसके अन्दर धैर्य नहीं है, वह भजन नहीं कर सकता ।

आप साधना चैनल पर प्रातः ०६ :४० से पूज्यश्री रमेश बाबाजी महाराज

एवं प्रातः ०७ :०० बजे से व्यासाचार्या मुरलिकाजी का नित्य सत्संग देख सकते हैं |

॥ साधना ॥ ॥ साधना ॥ ॥ साधना ॥ ॥ साधना ॥

सर्वमंगलकारिणी 'नारी-शक्ति'

श्रीबाबा महाराज द्वारा कथित-गौमहोत्सव-सत्संग (७/१/२०१९) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका व्यासाचार्या नवलश्री जी, मानमंदिर, बरसाना

बाबाश्री के शब्दों में – जिस समय चित्तौड़ के राणासांगा ने मीराजी के पिता को एक पत्र में लिखा था कि यह (मीरा) मरती भी नहीं है और धर्म का पालन भी नहीं करती है; जबकि शास्त्र, हिन्दूधर्म कहता है कि पति परमेश्वर होता है, इसलिए इसको अपने पति की सेवा करनी चाहिए परन्तु यह स्त्री उद्दण्ड है और राजाज्ञा भी नहीं मानती है | जिस समय मीराजी के ऊपर राजदरबार में शासन के उल्लंघन का अभियोग लगा था, कोर्ट में मुकदमा हुआ और घोषणा हुई कि मीराबाई अदालत में हाजिर हो तब मीराजी उस अदालत में फैसले के लिए गयीं | वह जानती थीं कि इस फैसले का फल है - प्राणदंड | जब अदालत में आवाज लगाई गई – मीराबाई हाजिर हों, तो उस समय मीरा ने गाया, **"थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ, मैं हाजिर नाजिर कब की खड़ी |"** हे दीनानाथ ! मैं तो कब से खड़ी हूँ, अब मेरा फैसला करो |" उनकी दृष्टि में तो सब कृष्ण थे | फैसला करने वाला भी कृष्ण है, सब कुछ कृष्ण है | ऐसी भक्ति संसार में कहाँ है ? मीराजी को प्राणदंड का फैसला सुनाया गया | मीराजी पहले ही जानती थीं कि मुझे यह दण्ड मिलने वाला है | अदालत में प्राणदंड के रूप में मीरा को विष का प्याला दिया गया | वैसे तो मीरा को तीन-चार बार विष का प्याला दिया गया था और उन्होंने विष पी लिया, भयभीत नहीं हुईं और विष पीकर कटोरा फेंक दिया | इस घटना के बाद ही मीरा के ससुर राणा ने मीराजी के माता-पिता को पत्र लिखा कि तुम्हारी पुत्री मेरी बात नहीं मानती है, किसी की भी बात नहीं मानती है | राणा सांगा के पत्र का उत्तर मीरा जी की माँ ने दिया |

आश्रय तो एकमात्र भगवान् का ही रहना चाहिए |

मानमंदिर की एक बालिका ने मीराबाई की इस घटना को कथा (मानमंदिर के नित्य प्रातःकालीन सत्संग) में सुनाया तो मैंने उससे पूछा कि ये प्रसंग कहाँ लिखा है, मुझे दिखाना क्योंकि मैं भी मीराजी के विषय में प्रायः बोलता ही रहता हूँ | उस बालिका ने कहा कि मैंने रघुराजसिंहजी की भक्तमाल 'रामरसिकावली' व मानमन्दिर की पत्रिका से यह प्रसंग पढ़ा है |

रघुराजसिंहजी कृत भक्तमाल अलग है और नाभाजी द्वारा रचित भक्तमाल अलग है | रघुराजसिंहजी ने अपनी भक्तमाल में वे बातें लिखी हैं जो गोस्वामी नाभाजी भी अपनी भक्तमाल में नहीं लिख पाए; यद्यपि ऐसा कहना नहीं चाहिए परन्तु हमने 'रामरसिकावली' को पढ़ा है, उन्होंने लिखा है कि मीराबाई के समय में अकबर ने विकट दु:शीलता प्रकट की थी, उसके पास पाँच हजार बेगमें थीं, वह मीना बाजार लगवाता था और उसमें से बड़े-बड़े राजाओं की सुन्दर रानियों को उठवा लेता था, वह अत्यधिक भोगी था; उस समय उसकी इस भयावह भोगपरायणता को देखकर लोगों ने कहा कि इसका विनाश होना चाहिए, नहीं तो यह हिन्दूधर्म का विनाश करेगा | इस संकट से बचने के लिए बहुत से वैष्णवों ने हनुमानजी का अनुष्ठान किया | रघुराजसिंहजी लिखते हैं कि हनुमानजी हाथ में गदा लेकर आगरा आये | अकबर की दो अदालतें थीं - एक दिल्ली में और दूसरी आगरा के पास फतेहपुर सीकरी में | जब हनुमानजी आगरा, अकबर के महल में उसे गदा लेकर मारने के लिए गये तो उन्होंने विचित्र दृश्य यह देखा कि उसके महल के बाहर राम-लक्ष्मण अकबर की रक्षा के लिए खड़े हैं | रघुराजसिंहजी ने लिखा है कि यह बड़े आश्चर्य की बात थी कि अकबर जैसे पतित की रक्षा भगवान् ने किया..!!

ऐसी उसमें क्या भक्ति थी, क्या गुण था? इसका उत्तर रघुराजसिंहजी स्वयं ही लिखते हैं कि यह मीराबाई के दर्शन का पुण्य था |

एकबार अकबर ने संगीत सम्राट तानसेन से पूछा कि क्या तुम्हारे समान गाने वाला, स्वर लगाने वाला कोई और दूसरा भी इस पृथ्वी पर है? तानसेन ने दो नाम बताये एक तो स्वामी हरिदासजी का और दूसरा श्रीमीराबाईजी का और कहा कि मीराजी जैसी परम सुन्दरी विश्व में कहीं नहीं है | अकबर बोला कि मैं उन्हें देखना चाहता हूँ | तानसेन बोले कि ऐसे तो आप उन्हें देख नहीं पाओगे क्योंकि सारा राजस्थान आपका शत्रु है | आप वहाँ जाओगे तो लोग आपको जान से मार देंगे | अकबर बोला, "कुछ भी हो, मीराबाई को देखना जरूरी है क्योंकि तुम उसे विश्व की सबसे बड़ी सुन्दरी बताते हो |" तानसेन ने कहा कि एक उपाय है, मैं फकीर बनता हूँ और तुम मेरे शिष्य बन जाओ और खवास (नौकर) बनकर मेरा तानपूरा उठाओ | तब तो काम बन सकता है | अकबर ने कहा, "चाहे मुझे नौकर बनना पड़े, चाहे कुछ भी बनना पड़े, मैं तो मीराबाई के दर्शन अवश्य करूँगा |" अब तो अकबर और तानसेन साधु के वेश में चित्तौड़ में मीराबाई के मन्दिर में पहुँचे |

हमने (बाबाश्री ने) चित्तौड़ के मीराजी के भवन, उनके मन्दिर की वीडियो रिकार्डिंग कराकर मँगवायी थी, उसमें वह मन्दिर दिखाया गया है जहाँ अकबर और तानसेन मीरा जी के दर्शन के लिए बैठे थे |तानसेन ने मीराजी के सामने अकबर की पहचान छिपाई; उसका नाम उन्हें नहीं बताया, केवल इतना ही कहा कि मैं तानसेन हूँ, गीत गाता हूँ | मीराजी ने कहा, "अच्छा ! कुछ गाकर सुनाओ |" तानसेन ने कुछ राग सुनाया और बाद में हाथ जोड़कर कहा, "मीरा जी ! आप भी कुछ गा दीजिये |" मीराजी ने भी पद गाया | उनके गान में ऐसा जादू था कि अकबर ने तुरंत ही उनको बहुमूल्य नौलखा हार भेंट किया | ऐसा नौलखा हार भारतवर्ष में एक ही था | मीराजी ने कहा कि यह बहुमूल्य हार मैं नहीं लूँगी, इसे मेरे गिरिधारीजी को पहनाओ | तब अकबर गया और गोपालजी के श्रीविग्रह को वह हार पहनाया | इस तरह से अकबर ने मीराजी के दर्शन का साहस किया था और यह मीराजी के दर्शन का ही पुण्य था कि उस पुण्य के प्रभाव से भगवान् राम-लक्ष्मण ने धनुष-बाण लेकर के हनुमानजी की गदा के प्रहार से अकबर को बचाया | हनुमानजी ने अपने इष्ट राम-लक्ष्मण को उसकी रक्षा में देखकर उन्हें प्रणाम करके वापस लौट आये | इसलिए भक्तिमती मीराजी के परममंगलमय दर्शन के कारण ही अकबर की मृत्यु-संकट से रक्षा हुई | अकबर के अंदर चाहे मीराजी के प्रति, एक भक्त के प्रति सम्मान का भाव रहा हो या न रहा हो किन्तु दर्शन का भाव तो उसके मन में आया ही था और इस दर्शन के कारण उसकी प्राण रक्षा हो गयी | रघुराजसिंहजी ने अपनी भक्तमाल में और भी बहुत-सी बातें लिखी हैं और वे सब सत्य हैं | इसलिए यदि नारी-शक्ति भगवान् की आराधना करती है तो निश्चय ही कल्याणकारी चमत्कार होता है | हमारे यहाँ प्रतिवर्ष जो ब्रजयात्रा में चमत्कार होता है, १५००० यात्रियों के लिए ४० दिन तक व्यवस्था करना और उसके लिए किसी से पैसा न माँगना तथा बिना धन की याचना किये ही माताजी गौशाला में ५५००० गौवंश की जो सेवा हो रही है, यह केवल हमारे यहाँ की आराधिकाओं (नारी भक्ताओं) की आराधना-शक्ति है | मैं तो इस बात को खुलेआम सबसे कहता हूँ; चाहे कोई मानो या न मानो, यहाँ (माताजी गौशाला में) कथा शुरू होने के प्रथम दिन रमणरेती के संत गुरुशरणानन्दजी और मलूकपीठाधीश्वर श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज मेरे पास आये और पूछा कि आपके स्वास्थ्य का क्या हाल है? मैंने कहा कि मेरा हाल यह है कि बालिकाओं द्वारा की गई उपासना से मैं सुरक्षित बच गया | इसलिए भूमि की सात आधार स्तम्भों में से नारी भी एक आधार स्तम्भ है –

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः ।
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ॥ (स्कन्दपुराण. ४.२.१०)

इस शास्त्र वचन के अनुसार नारियों में वह शक्ति है कि यदि वे आराधना करती हैं तो पृथ्वी को धारण कर सकती हैं

महापुरुषों के संग से बुद्धि महान बन जाती है।

सहज स्नेह का स्वरूप 'निःस्वार्थ सेवा'

श्रीबाबामहाराज द्वारा गौमहोत्सव में कथित सत्संग (९/१/२०१९) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका व्यासाचार्या बालसाध्वी श्यामाजी, दीदीजी गुरुकुल, मानमंदिर, बरसाना

बाबाश्री के शब्दों में – श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज ने अपने प्रवचन में जो कहा कि गाय के नाम से एक संघ, एक संगठन बनाया जाए, तभी गौवंश की सेवा-सुरक्षा होगी; यह बात हमको ठीक लगी | देखो, बिना संगठन के भगवान् भी काम नहीं कर सकते | जब भगवान् ने सृष्टि बनायी तो उन्होंने पंच महाभूतों का, सभी जीवों की इन्द्रियों तथा अन्तःकरणों का निर्माण किया, निर्माण करने के बाद भी सृष्टि कुछ नहीं चली | श्रीमद्भागवत में इसका उल्लेख किया गया है –

यदैतेऽसङ्गता भावा भूतेन्द्रियमनोगुणाः।
यदायतननिर्माणे न शेकुर्ब्रह्मवित्तम ॥

(श्रीमद्भागवतजी २/५/३२)

ब्रह्माजी कहते हैं, "हे नारद, भगवान् ने पंचमहाभूत बनाये, सबके मन बनाये, इन्द्रियाँ बनायीं, गुणमयी सृष्टि का निर्माण कर दिया लेकिन सृष्टि चली नहीं |" उसका कारण था **– 'असंगता भावा'** अर्थात् परस्पर में संगठन नहीं था, प्रेम नहीं था | भगवान् ने सब इन्द्रियों के देवता बनाये थे लेकिन फिर भी कुछ काम नहीं हुआ तो भगवान् भी आश्चर्य करने लगे कि यह सृष्टि कैसे चलेगी ? उन्होंने देखा कि मेरे द्वारा बनाये गये सृष्टि के इन तत्त्वों का आपस में असंगठन है, असंगता है; इसलिए कुछ काम नहीं हो रहा है तब भगवान् ने स्वयं सभी प्राणियों में, सभी पदार्थों में प्रवेश किया | प्रवेश करने के बाद उन्होंने सबको अपनी शक्ति से प्रेरित किया और सबको एकत्र किया | इससे सबके अंदर सद्-असद् भाव लुप्त हो गया | 'हम बड़े है, हमारा नाम हो' यह भाव समाप्त हो गया |

तदा संहत्य चान्योन्यं भगवच्छक्तिचोदिताः ।
सदसत्त्वमुपादाय चोभयं ससृजुर्ह्यदः ॥

(श्रीमद्भागवतजी २/५/३३)

यह भगवान् की शक्ति थी, जिसके कारण परस्पर असंगत भाव वाले, असंगठित ये तत्व एक-दूसरे से मिले | सबने गौण-प्रधान भाव अर्थात् 'मै बड़ा हूँ, यह छोटा है' इस प्रकार का भाव छोड़ दिया और तब दोनों प्रकार की सृष्टि स्थूल और सूक्ष्म चलने लगी, सारा संसार बन गया | इसलिए बिना संगठन के कुछ नहीं हो सकता | आज सारे समाज में जो विघटन है, यही असफलता का कारण है | यदि हम लोग संगठित हो जायें और खड़े हो जायें फिर देखें कि काम होता है या नहीं | यद्यपि यह बड़ा कठिन है | 'कलि' शब्द के २१ अर्थ हैं, उसमें एक अर्थ 'फूट' अर्थात् कलह भी है | इसलिए नारदजी ने भक्ति देवी से कहा था –

अयं तु युगधर्मो हि वर्तते कस्य दूषणम् |
अतस्तु पुण्डरीकाक्षः सहते निकटे स्थितः ||

(श्रीमद्भागवतजी, माहात्म्य१/७७)

यह युगधर्म है अर्थात् कलियुग का लक्षण है और इसी युगधर्म के कारण हमलोग परस्पर विघटित हैं | सारा समाज अब केवल विघटन की बात करता है ये हमारी जाति है, ये हमारा संप्रदाय है, जैसे गृहस्थियों में जातिवाद की फूट है, वैसे ही वैष्णवीमाया के कारण हमलोगों (साधु-वैष्णव समाज) में सम्प्रदाय का विघटन है और इस विघटन का यह फल है कि समाज में चारों ओर दुर्विषह क्रोध फ़ैल गया है | भगवान् कृष्ण ने उद्धवजी के प्रति भागवत के एकादश स्कन्ध में इसका निरूपण किया है –

कले र्दुर्विषहः क्रोधस्तमस्तमनुवर्तते ।

बुद्धि एकमात्र सत्संग से सुधरती है।

तमसा ग्रस्यते पुंसश्चेतना व्यापिनी द्रुतम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी ११/२१/२०)

विघटन बढ़ते-बढ़ते क्रोध बन गया और इसने सारे समाज को नष्ट कर दिया | क्रोध से तम पैदा होता है और उस तम से समाज की व्यक्तिगत या समष्टिगत चेतना लुप्त हो जाती है |

तया विरहितः साधो जन्तुः शून्याय कल्पते । ततोऽस्य स्वार्थविभ्रंशो मूर्च्छितस्य मृतस्य च ॥

(श्रीमद्भागवतजी ११/२१/२१)

चेतना नष्ट होने पर जीव शून्य हो जाता है, फिर न तो देश का कल्याण सोचता है और न ही अपना कल्याण सोचता है, मूर्छित और मृत की तरह हो जाता है | क्या आज सारा समाज यह नहीं जानता है कि हम लोगों में कमी है, विघटन है लेकिन इतने मुर्दे हैं हमलोग कि चेतनारहित हो गये हैं, चेतनाशून्य हो गये हैं, मूर्च्छित और मृत हो गये हैं | यह भगवान् ने कहा है कि कलियुग से दुर्विषह क्रोध पैदा होता है, सह नहीं सकता है मनुष्य, इतना असहिष्णु हो जाता है, हम सबलोग इसके शिकार हैं | इस दुर्विषह क्रोध ने भारत को ग्रसित कर लिया है, इसी कारण हमलोग मुर्दे हो चुके हैं, मर चुके हैं | इसलिए हम लोगों में परस्पर न तो प्रेम है, न सद्भाव है, न संगठन है | जब भगवान् ने सृष्टि निर्माण आरम्भ किया पंचमहाभूत, मन, इन्द्रिय और इन्द्रिय देवताओं को बनाया परन्तु इनमें परस्पर विघटन होने के कारण सृष्टि का काम जिस प्रकार नहीं चल सका, वही स्थिति आज हमारे समाज की हो गयी है | अब तो भगवान् ही कृपा करें | श्रीराजेंद्रदासजी महाराज ने जो गौ-संगठन बनाने की बात कही है, उसे सुनकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई | किसी ने यह भी कहा कि महाराजजी ने जिस प्रकार के गौ-संगठन निर्माण का सुझाव दिया, यह कठिन कार्य है | वास्तव में ऐसा संगठन बनना बहुत कठिन है | हमने उन व्यक्ति से कहा कि बात तो तुम्हारी ठीक है | हमारे पिताजी विश्वप्रसिद्ध बहुत बड़े ज्योतिषी थे | जब हम छोटे-से थे तो उन्होंने एक ज्योतिष की पुस्तक छपाई थी, उसमें उन्होंने लिखा था कि घोर कलियुग में भी ८० वर्ष के लिए सतयुग आयेगा | वह बात हमको याद आ रही है | भगवान् की कृपा से कठिन कुछ नहीं है | यदि ८० वर्ष के लिए सतयुग आ जाये तो आश्चर्य कुछ नहीं है | वह सतयुग संतों के द्वारा आयेगा | श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज ने जो प्रस्ताव पेश किया कि एक गौ-संगठन बनना चाहिए, उसकी प्रक्रिया भी बताई कि गौभक्तों का एक गाँव में एक प्रतिनिधि चुना जाये और फिर इस तरह क्रमशः जनपद में और धीरे-धीरे प्रान्त में, देश में भी गौ-प्रतिनिधि चुना जाए | ऐसा अगर हो जाए तो निश्चित है कि सतयुग आ गया | महाराजजी के गौ-संगठन सम्बन्धी वक्तव्य को सुनकर ही हम कथा में चले आये, इसलिए चले आये कि जिससे डूबती नैया में हम भी हाथ लगा दें और हमारे मन में विचार आया कि मानमन्दिर गौशाला में जो ५५ हजार गायें हैं या जितने भी हमलोग हैं, वे सभी श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज को समर्पित हो जायें किन्तु इस लोभ से समर्पित नहीं होंगे कि ५५ हजार गायें हैं, इनका खर्च नहीं चल रहा है, ऐसा कोई लोभ नहीं है | गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में कहा – **सहज सनेहँ स्वामि सेवकाई ।**

स्वारथ छल फल चारि बिहाई ॥

(श्रीरामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड- ३०१)

सहज सेवा का भाव है | चारों फल (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की इच्छा करना छल है | भगवान् की कृपा से हम यह छल नहीं रखते हैं कि राजेन्द्रदासजी महाराज हमारे यहाँ का खर्च चलावें या इनके बहुत ही अनुगामी लोग हैं, इस प्रकार का छल मन में रखना बनियागीरी है, भक्ति नहीं है | प्रह्लाद जी ने नृसिंह भगवान् से कहा है –

नान्यथा तेऽखिलगुरो घटेत करुणात्मनः ।

यस्त आशिष आशास्ते न स भृत्यः स वै वणिक् ॥

(श्रीमद्भागवतजी ७/१०/४)

आपसे अपनी कामनायें पूर्ण करना चाहता है, वह तो निरा बनिया है |

आशासानो न वै भृत्यः स्वामिन्याशिष आत्मनः। न स्वामी भृत्यतः स्वाम्यमिच्छन् यो राति चाशिषः॥

(श्रीमद्भागवतजी ७/१०/५)

भगवान् से भी जो इच्छा करता है कि हमको कुछ मिले ऐसे व्यक्ति के अंदर भक्ति नहीं है, बनियागीरी है | प्रह्लादजी ने नृसिंह भगवान् को बड़ा कड़ा उत्तर दिया क्योंकि उन्होंने प्रह्लाद जी से कहा था – प्रह्लाद ! मुझसे कुछ भी माँग ले, मैं समस्त कामनाओं को पूरा करने वाला हूँ | प्रह्लाद जी ने ऐसा सुना तो भगवान् से बोले –

मा मां प्रलोभयोत्पत्त्याऽऽसक्तं कामेषु तैर्वरैः । तत्सङ्गभीतो निर्विण्णो मुमुक्षुस्त्वामुपाश्रितः ॥

(श्रीमद्भागवतजी ७/१०/२)

आप मुझे ऐसे वरदानों का लोभ क्यों दे रहे हो | मैं तो इन आसक्तियों से डरकर आपकी शरण में आया हूँ, निर्विण्ण हो गया हूँ, ये आसक्तियाँ छूटती नहीं हैं | आगे प्रह्लादजी बोले कि भगवान् तो ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि वे करुणामय हैं | अतः प्रह्लाद जी ने कहा –

भृत्यलक्षणजिज्ञासुर्भक्तं कामेष्वचोदयत् ।
भवान् संसारबीजेषु हृदयग्रन्थिषु प्रभो ॥

(श्रीद्भागवतजी ७/१०/३)

आपने परीक्षा के लिए, मेरे लक्षण को जानने के लिए ऐसे शब्द कहे लेकिन इतना जरूर है –

अहं त्वकामस्त्वद्भक्तस्त्वं च स्वाम्यनपाश्रयः |
नान्यथेहावयोरर्थो राजसेवकयोरिव ||

(श्रीमद्भागवतजी ७/१०/६)

मैं आपका निष्काम सेवक हूँ और आप मेरे निरपेक्ष स्वामी हैं | यदि आपको देना है तो हे नरहरे !

यदि रासीश मे कामान् वरांस्त्वं वरदर्षभ ।
कामानां हृद्यसंरोहं भवतस्तु वृणे वरम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी ७/१०/७)

ऐसा वरदान दो, ऐसी शक्ति दो कि मेरे मन में कभी कामना पैदा ही न हो | ऐसा वर मैं आपसे माँग रहा हूँ |

सहज सनेहँ स्वामि सेवकाई ।
स्वारथ छल फल चारि बिहाई ॥

(श्रीरामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड- ३०१)

मैं स्वार्थ नहीं रखता हूँ परन्तु श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज के गौ-संगठन सम्बन्धी विचार बहुत अच्छे लगे | देश का कल्याण इसी में है भैया ! कि संगठित हो जाओ, खड़े हो जाओ और इसके लिए कुछ करो | सबको करना चाहिए और इसीलिए मैं यहाँ आया हूँ, नहीं तो मेरा विचार तो इस 'गौभक्तिमहोत्सव' में आने का नहीं था क्योंकि यहाँ झूठी बातें सुनने को मिलती हैं कि बाबा यात्रा चलाते हैं, बाबा गौशाला चलाते हैं, बाबा को तो रोटी खाने का ठिकाना नहीं है, मधुकरी माँगकर खाते हैं, खाने को अन्न नहीं है तो गौशाला क्या चलायेंगे, यात्रा क्या चलायेंगे ? यात्रा में तो १५-१६ हजार लोगों के दोनों समय भोजन की ४० दिन तक व्यवस्था करनी पड़ती है, उनके निवास हेतु टेंट, बीमार पड़ने पर औषधि, बिजली, पानी आदि कई सुविधाओं का प्रबंध करना पड़ता है | ऐसी स्थिति में एक मधुकरी माँगने वाला इतनी बड़ी यात्रा क्या चलाएगा? इसे श्रीराधारानी चलाती हैं, जिनका नाम यात्रा के पर्चे पर छपता है – श्रीराधारानी ब्रजयात्रा | हम तो श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज को गौ-संगठन हेतु सारा मानमन्दिर भेंट कर रहे हैं क्योंकि इनके ऐसे सुन्दर विचार हैं और इसलिए नहीं भेंट कर रहे हैं कि यहाँ का बहुत बड़ा खर्च है | वह खर्च तो श्रीजी चलायेंगी, हम-तुम क्या चलायेंगे लेकिन सहयोग देना आवश्यक है, कर्त्तव्य है, हम सबका कर्त्तव्यपालन है | अगर कोई समझे कि इनमें छल है क्योंकि गौशाला में बहुत बड़ा खर्च है, गौसेवा हेतु २०-२५ लाख रुपये १ दिन में खर्च हो जाते हैं | मेरे द्वारा महाराजजी को मानमंदिर और गौशाला भेंट करने के प्रयास को यदि कोई

छल समझे तो समझते रहो | यदि मेरे अंदर छल होगा तो प्रभु मुझे उसका दण्ड देगा | संतों से छल करना तो महापाप है | मैं इनको लोभ देने को नहीं आया हूँ, कोई कहे बाबा अपनी बचत कर रहे हैं तो ऐसा नहीं है, हम लोग तो मानमंदिर और गौशाला में जैसे अब सेवा कर रहे हैं, वैसे ही करते रहेंगे, ऐसा नहीं कि महाराजजी पर सब बोझ डाल दिया कि अब हम लोग कुछ नहीं करेंगे | जिसमें सेवा करने की जितनी शक्ति है, वह करता रहेगा, श्रीराजेन्द्रदासजी के सेवाकार्य में सहयोग करते रहेंगे | यद्यपि यह बड़ा कठिन है किन्तु इन्होंने जो बात कही यही एकमात्र रास्ता है कि किसी तरह हम लोग संगठित हो जायें तो समाज का, देश का कल्याण है, नहीं तो कुछ कल्याण नहीं है, ऐसे ही धक्के खाते हैं और खाते रहेंगे | कोई यदि कहे कि आप इनको मानमंदिर और गौशाला क्यों दे रहे हो तो इसका उत्तर भागवतजी में राजा बलि ने दिया है, बलि महाराज कहते हैं कि मैंने भगवान् को दान दिया तो क्यों दिया ?

सुलभा युधि विप्रर्षे ह्यनिवृत्तास्तनुत्यजः ।
न तथा तीर्थ आयाते श्रद्धया ये धनत्यजः ॥

(श्रीमद्भागवतजी ८/२०/९)

युद्ध में प्राण देना खेल है, सुलभ है किन्तु सत्पात्र के आने पर उसको कुछ दिया जाए, यह असम्भव है अर्थात् ऐसे लोग बहुत दुर्लभ हैं जो सत्पात्र के प्राप्त होने पर श्रद्धा के साथ दान करें | ऐसे सन्त जिनके गौ-संगठन के बारे में ऐसे विचार हैं और निर्भयता के साथ जो इसे कह रहे हैं, नहीं तो इस समय सरकार के विरोध में बोलने की किसी में हिम्मत नहीं है | शासन तभी सफल होगा जब यह पार्टी धर्म पर चलेगी, भारतीय संस्कृति की रक्षा करेगी, सनातन धर्म कापोषण करेगी और नहीं तो नष्ट हो जायेगी | हिरण्यकशिपु द्वारा बहुत अधिक अत्याचार किये जाने पर आकाशवाणी हुई थी –

यदा देवेषु वेदेषु गोषु विप्रेषु साधुषु ।
धर्मे मयि च विद्वेषः स वा आशु विनश्यति ॥

(श्रीमद्भागवतजी ७/४/२७)

जब कोई वेदों से, देवताओं से, गायों से, ब्राह्मणों से, साधुओं, धर्म और मुझसे द्वेष करता है, वह अपने आप ही नष्ट हो जायेगा | जब परीक्षित का राज्य खत्म हुआ, कलियुग का आगमन हुआ, तब से शासक बदलते गये | आप लोग इतिहास को देखें और समझें, भारत में विदेशी शासक आये | हजारों वर्षों तक भारतवर्ष गुलाम रहा | हम पर विदेशियों का शासन रहा, उन्होंने हमारी संस्कृति का नाश किया, हमारे धर्म का नाश किया, हममें क्या रहा? कुषाण और हूण, जिनका शासन भारत में रहा, ये विदेशी थे | परीक्षित जी के बाद से हम बता रहे हैं कि विदेशी राज्यों में कुषाण वंश और हूण वंश ने शासन किया | उनका शासन गया तो ईसा से विदेशियों की भीड़ लग गयी भारत में | गुलाम वंश आया, तुगलक वंश आया, सैयद वंश आया, लोदी वंश आया और इन सबके बाद मुग़ल वंश ने भारत पर राज्य किया थोड़े-थोड़े समय के लिए और सब चलते गये, इनमें से कोई भी टिका नहीं जबकि ये सोचते थे कि सारे भारत पर हम अखण्ड राज्य करेंगे और जिन्होंने इतिहास पढ़ा है, वे जानते हैं, उन्हें देख लो - चाहे तुगलकवंश रहा हो, चाहे सैयद और लोदीवंश रहा हो, इन सभी ने थोड़े-थोड़े समय तक ही राज्य किया और १०० साल से अधिक किसी वंश का शासन नहीं रहा और इन सबके शासन अन्त में समाप्त हो गये, क्यों समाप्त हुए, इसमें प्रमाण है - श्रीमद्भागवत में वर्णित वही आकाशवाणी, जो हिरण्यकशिपु के अत्याचारों से संतप्त जगत को आश्वस्त करने के लिए हुई थी – (भागवतजी ७/४/२७) जो देवताओं से, वेदों से, गायों, ब्राह्मणों, साधु-संतों, धर्म और भगवान् से द्वेष करता है, उसका शीघ्र ही विनाश हो जाता है |

साधन करना आवश्यक है, लेकिन 'मैं कर रहा हूँ' यह साधन का अहम् नहीं करना चाहिए। यह बड़ा कठिन है क्योंकि हर कर्म में मनुष्य का अहम् छिपा रहता है, वह केवल सेवा से ही नष्ट हो सकता है |

गौ-सेवानिष्ठ ही वास्तविक ब्रजवासी

श्री बाबा महाराज द्वारा कथित- गौ-महामहोत्सव-सत्संग (७/१/२०१९) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी ललिता जी, मानमंदिर, बरसाना

श्रीबाबामहाराज के शब्दों में – गौमाता संसार की पूज्य है | **"गावो विश्वस्य मातरः |"** वेदों में सबसे पहले यही बात कही गयी है कि गाय सारे संसार की माता है | 'रसीली ब्रजयात्रा, भाग-१' में हमने इसका संकेत दिया है कि सारा भारत ही यदि गौ-पालन करने लग जाये तो इस देश में वह शक्ति है कि यह सारे विश्व को अन्न दे सकता है | 'रसीली ब्रजयात्रा' ग्रन्थ के प्रथम भाग में इस विषय पर आंकड़े सहित एक लेख छपा है कि सम्पूर्ण संसार में सबसे अधिक उपजाऊ भूमि भारतवर्ष में ही है | दुनिया के किसी भी देश (चीन, अमेरिका, रूस आदि) में भारत के समान विशाल उपजाऊ भूमि नहीं है | कमी है तो केवल गाय की है, नहीं तो सम्पूर्ण विश्व को भारत अन्न दे सकता है | रसीली ब्रजयात्रा के गौ-महिमा वाले लेख में इस सन्दर्भ में आंकड़े दिए गये हैं, जो चाहे उसे पढ़ सकता है | सारांश हम बता रहे हैं कि आज भी हमारे देश में वह शक्ति है, आज भी भारत सोने की चिड़िया है लेकिन हम लोगों ने इसे पीतल बना रखा है | इसका कारण है 'युगकृत दोष' | कलियुग आया तो सबसे पहले परीक्षित जी को इसका दर्शन हुआ | श्रीमद्भागवत में इस सन्दर्भ में कथा वर्णित है | प्रथम स्कन्ध के सत्तरहवें अध्याय में इसका उल्लेख किया गया है | परीक्षित जी जब देश पर दिग्विजय करने चले तो उन्होंने देखा कि गौवंश पर अत्याचार हो रहा है | वहाँ एक बैल था, जिसकी तीन टाँगें तो तोड़ दी गयी थीं और केवल एक चौथे टाँग से वह खड़ा था | इसके अतिरिक्त एक दुर्बल गाय थी, जो शूद्र रूपी कलियुग से पीड़ित थी | गौवंश पर अत्याचार करने वाले उस शूद्र से परीक्षित ने पूछा, "तुम कौन हो ? पांडवों से शासित इस देश में मेरे सामने ऐसा दृश्य कैसे दिखाई पड़ रहा है ? गौवंश पर अत्याचार करने वाले तुम कौन हो ?" कलियुग घबरा गया | शूद्र आदमी के रूप में वह कलियुग ही था, जो गौवंश पर अत्याचार कर रहा था | परीक्षित जी द्वारा फटकारे जाने पर भय के कारण वह उनकी शरण में आया और बोला कि आप तो शरणागतवत्सल हैं, मुझे शरण दीजिये, मैं कहाँ रहूँ ? परीक्षित जी ने विचार किया कि इसने शरणागतवत्सलता की बात कही है और हमारे पूर्वजों का नाम लिया है | इसके अतिरिक्त एक विशेष कारण था, जिसके फलस्वरूप परीक्षित ने कलियुग को छोड़ दिया | वह विशेष कारण यह था –

यत्फलं नास्ति तपसा न योगेन समाधिना |
तत्फलं लभते सम्यक्कलौ केशवकीर्तनात् ||

(श्रीमद्भागवत, माहात्म्य १/६८)

किसी अन्य युग में भगवन्नाम की इतनी अधिक महिमा नहीं है जितनी कि कलियुग में है | तपस्या कर लो, योग कर लो, समाधि लगा लो, इन साधनों से जो फल मिलेगा, वह फल कलियुग में केवल भगवन्नाम कीर्तन से ही प्राप्त हो जायेगा | मात्र यही एक कारण था जिससे कि परीक्षित ने कलियुग पर प्रहार नहीं किया और शरणागतवत्सलता निभाने के लिये उसको छोड़ दिया | कलियुग ने परीक्षित से कहा, "महाराज ! मुझे रहने के लिए स्थान दो |" चार स्थान पर तो कलियुग जी पहले ही रहते थे, अब परीक्षित जी ने उसे रहने को पाँचवाँ स्थान और दे दिया –'स्वर्ण' | माँसाहार, मदिरापान, द्यूत (जुआ) और स्त्री-आसक्ति आदि तो पहले ही परीक्षित जी द्वारा कलियुग को दिये गये स्थान थे | इन स्थानों पर कलियुग जी पहले से रहते थे | पाँचवाँ स्थान 'स्वर्ण' में परीक्षित ने अलग से कलियुग को दिया | कलियुग संतुष्ट

हो गया और प्रसन्नता से सोचने लगा, "ओहो! अब तो मेरा सब जगह प्रवेश हो गया |" कलियुग जानता है कि सारा संसार स्वर्ण अर्थात् द्रव्य (धन) का भूखा है | हम लोगों को भी पैसा चाहिए | हम लोग भी संग्रह करते हैं और इसलिए तेजहीन हो गये हैं | बड़ी लज्जा की बात है कि बड़े-बड़े महात्माओं के यहाँ इतना अधिक द्रव्य (धन) निकलता है जिसका हम वर्णन नहीं कर सकते | उसका वर्णन करना व्यर्थ की बात है, यह लज्जा की बात है | हम लोगों को तपस्वी बनना चाहिए, हम लोगों को त्यागी बनना चाहिए और हम लोग इसके विपरीत संग्रही बन गये हैं | त्याग का तो नाम ही नहीं है | जहाँ चले जाओ वहाँ केवल द्रव्य, द्रव्य, द्रव्य...| यहाँ तक कि बिना द्रव्य के आजकल कोई साधन नहीं चलते हैं | श्रीमद्भागवत में प्रह्लाद जी ने पहले ही इसके बारे में कह दिया था –

मौनव्रतश्रुततपोऽध्ययनस्वधर्म
व्याख्यारहोजपसमाधय आपवर्ग्याः ।
प्रायः परं पुरुष ते त्वजितेन्द्रियाणां
वार्ता भवन्त्युत न वात्र तु दाम्भिकानाम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी ७/९/४६)

मौन, व्रत, तप, वेदाध्ययन, स्वधर्मपालन, शास्त्रों की व्याख्या (प्रवचन), एकान्त सेवन, जप, समाधि और दानादि दस धर्म के साधन थे; इन सभी को हम लोगों ने दम्भ का साधन बना लिया | यह प्रह्लादजी ने नृसिंह भगवान् से कहा, "हे नरहरे ! ये दसों साधन अजितेन्द्रिय लोगों ने दम्भ के साधन बना लिये |" इसलिए कलियुग परीक्षित जी के दिये दान (स्वर्ण में निवास) से संतुष्ट हो गया और उसने सोच लिया कि अब तो मैं सब जगह घुस जाऊँगा | किसको पैसा नहीं चाहिए | आज पैसे की जो स्थिति है, उसे सभी जानते हैं | यहाँ तक कि गौशाला भी एक धंधा बन गया है | यद्यपि ऐसी कड़ी बात कहनी नहीं चाहिए परन्तु क्या करें, मेरा स्वभाव है कड़वा बोलना, मीठा बोलना तो मुझे आता ही नहीं है | बड़ा आश्चर्य है कि गाय का पैसा भी हमलोग खा जाते हैं | सन् २००७ में जब श्री माताजी गौशाला स्थापित की गयी तो मुझे यहाँ बुलाया गया, मैंने उस समय सबके सामने यह बात कही थी और आज भी मैं कह देता हूँ कि गाय का पोषण हम लोग नहीं कर सकते, न हमारे में सामर्थ्य है | यदि तुम लोग सच्चाई के साथ गौसेवा करोगे तो देख लेना अपने आप गौशाला चलेगी; किन्तु कहीं प्रबन्धक लोग गड़बड़ न कर दें | गौसेवा का पैसा हम लोग लेते हैं किन्तु गौसेवा के अतिरिक्त कार्यों में लगा देते हैं | यहाँ तक कि भंडारों में लगा देते हैं और धर्म के नाम से जाने कहाँ-कहाँ लगा देते हैं - कि यह तो संतों की सेवा है और संत-सेवा भी तो आवश्यक है | संत-सेवा आवश्यक है किन्तु इसमें गौमाता की सेवा का पैसा क्यों लगाते हो? संत-सेवा तो स्वयं ही तुमको इसका खर्च दे देगी | हम लोगों को गाय-सेवा का पैसा इधर-उधर खर्च करने का अधिकार नहीं है | हमारे मानगढ़ में आज तक पंगत नहीं हुई क्योंकि पंगत के लिए पैसा चाहिए | कोई हमारे पास बाहर का व्यक्ति आकर यदि कहता है कि हम साधु सेवा करना चाहते हैं तो हम उसे नीचे रसमन्दिर में भेज देते हैं | मान मन्दिर में सैकड़ों साधु हैं जो ब्रजवासियों की मधुकरी (भिक्षान्न) खाते हैं | मधुकरी इसलिए खाते हैं क्योंकि शास्त्र का सिद्धांत है – **'यथान्नं तथा मनः |'** जैसा अन्न खाओगे, वैसा मन बनेगा | हमारे यहाँ सभी संत मधुकरी का अन्न खाते हैं | गुरुकुल के बालक भी ब्रजवासियों के यहाँ रसमन्दिर में प्रसाद पाते हैं | मधुकरी का अर्थ है - ब्रजवासियों का अन्न | सौ से अधिक मानगढ़ की कन्यायें भी ब्रजवासियों का अन्न खाती हैं | **'शुद्ध अन्न खाओ, अशुद्ध अन्न मत खाओ, इससे बुद्धि शुद्ध हो जायेगी |'** सबसे पहली चीज यही है | कोई भी मानगढ़ पर आकर इसकी परीक्षा कर सकता है | मानमन्दिर की

साध्वियाँ और गुरुकुल के बालक प्रतिदिन प्रभातफेरी के लिए श्रीजी मन्दिर में ब्रह्ममुहूर्त के अन्धकार में जाते हैं | वहाँ प्रायः लोग इन्हें ५०० के नोट देते हैं लेकिन कोई भी इसे ग्रहण नहीं करता | लोगों से हम कह देते हैं कि इन्हें धन देकर के देखो कि इनका कैसा आचरण है | मानमन्दिर के बालक और साध्वियाँ जब देने पर भी पैसा नहीं लेते तो कोई इन्हें क्या देगा | इतना विशाल मानमन्दिर आश्रम है; यहाँ सैकड़ों बालक, सैकड़ों साध्वियाँ और साधुजन हैं तथा ५५ हजार गायें हैं परन्तु इनके भरण-पोषण के लिए आज तक चन्दा नहीं किया गया | मानमन्दिर से आज तक कोई चन्दा लेने के लिए झोली लेकर बाहर नहीं गया और इसकी जरूरत भी नहीं है | बीच-बीच में संकट आता है | प्रतिवर्ष यात्रा में करोड़ों रुपयों का व्यय हो जाता है किन्तु कोई नहीं कह सकता कि यात्रा के लिए धन अर्जित करने के लिए हम लोग सेठों के पास गये और चन्दा किया गया | यदि इसी प्रकार शुद्धि की भावना बनी रही तो अवश्य ही काम चलता जाएगा और जब भावनायें दूषित हो जायेंगी तब क्या होगा, यह हम नहीं कह सकते क्योंकि हमारे पास कुछ नहीं है | हमारे पास तो बैंक बैलेंस भी नहीं है | एक पाई का भी संग्रह हम लोग नहीं करते हैं | हमारे यहाँ न तो यात्रा के लिए कोई कोष है, न गौ-सेवा हेतु कोई धन-संग्रह है | अपनी इच्छा से अगर कोई देता है तो उसे ठुकराया नहीं जाता क्योंकि सेवा करने का सबको अधिकार है | गौमाता की सेवा के बारे में भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं गोविन्दलीलामृत में कहा है –

गोपालनं स्वधर्म्मो नस्तास्तु निश्छत्र-पादुकाः ।
यथा गावस्तथा गोपास्तर्हि धर्म्मः सुनिर्म्मलः ॥

(गोविन्दलीलामृत, पंचम सर्ग- २८)

यशोदा मैया ने कहा, "लाला ! गायें तो कंकड़ों में, काँटों में जाती हैं किन्तु तेरे चरण बड़े कोमल हैं इसलिए पैरों में जूता पहन ले, सिर पर छतरी लगा ले |" भगवान् ने उत्तर दिया, "माँ ! गोपालन करना हमारा निजी धर्म है, छतरी और जूता पहनकर मैं गाय चराने नहीं जाऊँगा | निर्मल गौ-सेवा तभी होगी जैसे गौमाता नंगे पाँव और बिना छतरी के चलती हैं, वैसे ही हम लोग भी गौमाता की सेवा करें |" आजतक श्रीकृष्ण जैसा गोपालक सृष्टि में नहीं हुआ | बड़ा लम्बा श्लोक श्रीकृष्ण ने गोविन्दलीलामृत में गौ-सेवा के सम्बन्ध में कहा है | धर्म अपने-आप हमारी और देश की रक्षा करता है – **"स रक्षति धर्म यत्र रक्षतः |"** धर्म की रक्षा स्वयं संसार की रक्षा करती है | गोविन्द ने यशोदा मैया से कहा, "ब्रज की बड़े-बड़े असुरों से रक्षा हुई, इसका कारण है - गौसेवा |" उस समय समस्त ब्रजवासी गौ-सेवा करते थे | ऐसी गौ-सेवा आज तक कभी और कहीं नहीं हुई | गौ-सेवा स्वयं श्रीकृष्ण करते थे | इसलिए गोपियों ने कहा -

"चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून्नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति॥"

(श्रीमद्भागवतजी १०/३१/११)

हे गोपाल ! तुम गौचारण के लिए वन में चले जाते हो | तुम्हारे चरण तो कमल से भी अधिक सुंदर हैं, क्या तुम गौचारण करते समय कष्ट नहीं पाते हो क्योंकि गायें तो कंकड़ों पर, कँटीली घासों पर चलती हैं, कँटीले अंकुरों पर चलती हैं और जहाँ गायें जाती हैं, वहाँ तुमको भी जाना पड़ता है | इस बात से हमें बहुत कष्ट हैं लेकिन तुम अपनी मैया की बात नहीं मानते हो, न छतरी धारण करते हो, न जूता पहनते हो | तुम तो कहते हो – **"यथा गावस्तथा गोपाः |"** जैसे गाय रहती है वैसे ही ग्वारिया को भी होना चाहिए | यह आदर्श श्रीकृष्ण ने स्वयं पालन करके दिखाया | इसलिए सब ब्रजवासी इतनी निष्ठा के साथ गौ-सेवा करते थे तो इसका परिणाम यह हुआ कि ब्रज में रावण से भी अधिक बलवान असुर आये परन्तु वे नष्ट हो गये | पुराणों में अन्य ग्रन्थों में लिखा है कि ब्रज पर हमला करने वाले असुर रावण से भी अधिक बलवान थे किन्तु ब्रज में आकर के नष्ट हो गये; ऐसी शक्ति थी ब्रज में | ये शक्ति ब्रजवासियों में गौ-पालन से आयी |

सहिष्णु नहीं है तो भजन नहीं कर पायेगा ।

गौसेवक-संगठन से ही होगा गौवंश का संरक्षण

गौसेवी संत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज, मलूकपीठ, श्रीवृन्दावनधाम

संकलनकर्त्री एवं लेखिका व्यासाचार्या बालसाध्वी गोपालीजी, दीदीजी गुरुकुल, मानमंदिर, बरसाना

अच्छे दिन हमारे देश में तभी आयेंगे जब भारतवर्ष की धरती गोबर और गौमूत्र की सुगंध से सुवासित होगी, हरितक्रान्ति और श्वेतक्रान्ति फिर से आयेगी, कृषि और ऋषि- दोनों की प्रतिष्ठा गौ आधारित होगी, हमारी चिकित्सा भी गौ आधारित होगी, हमारी कृषि भी गौ आधारित होगी और हमारा व्यवसाय भी गौ आधारित होगा | ये सब जब होगा तब इस देश में अच्छे दिन आ जायेंगे | हाँ, यह बात हम बहुत प्रसन्नता के साथ कहते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारे देश का सम्मान बहुत बढ़ा, इसके लिए बहुत-बहुत साधुवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद | देशहित में सरकार की ओर से अच्छे निर्णय लिए गये | सेना का मनोबल बढ़ा, अच्छे कार्य भी हुए, उन अच्छे कार्यों की हम प्रशंसा भी करते हैं लेकिन फिर वही प्रश्न है कि हम लोग विफल क्यों हो रहे हैं ? मुगलकाल से लेकर अंग्रेजी शासन और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हर वर्ष हमलोग वर्षगाँठ मना लेते हैं फिर भी विफलता क्यों है? गौवंश की उपेक्षा के कारण | गाय के संरक्षण के पवित्र कार्य में, गौशालाओं के निर्माण के पवित्र कार्य में भी अनेक संस्थायें देश में काम कर रही हैं, अपने-अपने स्तर पर सभी लोग काम कर रहे हैं, अपने-अपने स्तर से सभी अपनी बात भी उठा रहे हैं लेकिन कोई एक आवाज शासक के कान तक नहीं पहुँच रही है | एक ही कार्य है, लक्ष्य एक ही है और उस लक्ष्य की ओर चलने वाले अनेक हैं लेकिन यदि उन अनेक लोगों के अलग-अलग स्वर हैं, उनमें यदि संगठन नहीं है तो लक्ष्य तक पहुँचना अत्यंत ही कठिन है | यमुना जी की बात आप करते हैं और यमुना जी की बात हम भी करते हैं | अब हम अलग झंडा खड़ा करें, आप अलग झंडा खड़ा करें, इससे आन्दोलन कमजोर पड़ जायेगा | यमुना जी की बात करने वाले पूरे राष्ट्र में एक स्वर से बात करें और एक स्वर से उनकी संगठित आवाज सरकार तक जायेगी तो यमुना जी की समस्या का समाधान हो जायेगा | अब गाय के सम्बन्ध में हम कुछ कह रहे हैं और आपने कुछ दूसरी बात कह दी | इसी में झगड़ने लग जाते हैं | कोई कहता है कि गाय को राष्ट्र प्राणी बनाओ, कोई कहता है कि गाय को राष्ट्र माता बनाओ, कोई कहता है अमुक बनाओ, कोई कहता है अमुक बनाओ, इसी में हम लोगों का मतभेद है | प्रत्येक गौ-उपासक को, गौ-सेवक को यह समझना पड़ेगा कि भारतवर्ष में ही नहीं, इस पृथ्वी पर वेदलक्षणा भारतीय नस्ल की जितनी भी गाये हैं, वे हमारे गोपाल जी की हैं और हम गोपाल जी के हैं, इस नाते सब गाये हमारी हैं, सब गौशालायें हमारी हैं और सभी गौ-सेवक हमारे हैं | ये भाव जब आपके मन में होगा तब इस लक्ष्य की ओर हमलोग ईमानदारी से आगे बढ़ेंगे | माताजी गौशाला तो हमारी अपनी है ही, जड़खोर गौशाला, पथमेड़ा गौशाला तो अपनी है ही, हम तो श्रीठाकुर जी के नाते, गौमाता के नाते स्वीकार करते हैं कि इस भारतवर्ष की धरती पर छोटी-बड़ी जितनी भी गायें हैं, वे सब हमारे ठाकुर जी की हैं, वे सब हमारी हैं, सब गौशालायें हमारी हैं | सब गौशालाओं की उन्नति हमारी ही उन्नति है | कई बार यही एक मतभेद हो जाता है कि वह नीचा, वह ऊपर | अरे राम-राम, क्या लक्ष्य है आपका, क्या श्रेय अपने सिर पर बाँधना चाहते हो ? लंका विजय का श्रेय रामजी ने अपने ऊपर नहीं लिया था |

ये सब सखा सुनहु मुनि मेरे |
भये समर सागर कहँ बेरे ||

(श्रीरामचरितमानसजी, उत्तरकाण्ड – ८)

रामजी ने बन्दर-भालुओं को लंका विजय का श्रेय दिया | बन्दर-भालू सोचने लगे कि हो सकता है कि हमारी संख्या ज्यादा थी, असुरों की संख्या कम थी क्योंकि रामजी ने तमाम असुरों का वध कर दिया था | एक-एक राक्षस के ऊपर सौ-सौ बन्दर चिपट गये तो बेचारे क्या कर पाते, बंदरों ने उन राक्षसों को चीर-फाड़ दिया | परन्तु बड़े-बड़े दैत्यों को तो राम-लक्ष्मण ने ही समाप्त किया क्योंकि उनको देखकर तो हम ही अपनी जान बचाकर भाग रहे थे | उनको तो रामजी ने ही समाप्त किया | रामजी जी ने कहा कि उसका श्रेय भी मेरे ऊपर नहीं है, फिर किसको श्रेय है तो रामजी बोले-

गुरु वशिष्ट कुल पूज्य हमारे |
इन्ह की कृपाँ दनुज रन मारे ||

(श्रीरामचरितमानसजी, उत्तरकाण्ड – ८)

हमारे ब्रज के ठाकुर हैं कृष्ण-बलराम, कृष्णचरित्र में भी देखें तो ठाकुर जी कभी भी श्रेय स्वयं नहीं लेते और हमारे ठाकुर के ग्वाल बाल सखा तो ऐसे हैं कि ठाकुर जी कथिंचित श्रेय लेना भी चाहें तो वे श्री नहीं लेने देते | ग्वालबाल बोले- अरे कन्हैया ने कहा काम कियो ? कुछ बोले- याने काली नाग नाथ्यो | मधुमंगल बोल्यो- याने काली नाग नाथ्यो लेकिन मंत्र तो हमने बांध्यो, नहीं तो फुस्स कर देतो तो कन्हैया के प्राण छूट जाते | मधुमंगल बोल्यो कि हमने राजमंत्र ते काली नाग को कील दियो | काऊ ने कहो कि कन्हैया ने गिरिराज उठायो | ग्वालबाल बोले- अरे पंसेरी तो यापे उठे नाय, गिरिराज कहाँ ते उठायेगो | हमने अपनी लठियान ते गिरिराज धारण कियो | ठाकुर जी सदा अपने सखान को श्रेय देय हैं | मथुरा में कंस के अखाड़े में कंस के प्रसिद्ध पहलवान शल, तोशल, चाणूर और मुष्टिक को ठाकुर जी ने खेल-खेल में समाप्त कर दिया | कंस के बाजे बजने लगे | आसमान में देवता गण बाजे बजा रहे थे | कंस को बड़ा क्रोध आया कि हमारे वीर मल्ल मारे गये और हमारे ही शत्रु की विजय पर बाजे भी हमारे बज रहे हैं | उसने चिल्लाकर कहा - बंद करो बाजे | उस समय जोरदार ध्वनि इतनी तीव्रता के साथ हो रही थी कि बोलने पर केवल मुंह चलता हुआ दिखायी देता था किन्तु शब्द सुनाई नहीं पड़ते थे | अब कंस की आवाज तो बाजे वालों को सुनाई नहीं पड़ी लेकिन उन्होंने समझा कि कंस महाराज कह रहे हैं कि उत्सव पूरा होने वाला है, ऐसे में बाजे धीरे-धीरे क्यों बजाते हो, जोर से बजाओ | अतः वे पूरी ताकत लगाकर नगाड़े और अन्य वाद्य यन्त्र बजाने लगे | अब तो कंस पगला गया | इसके पहले यह नाटक हुआ कि ठाकुरजी ने अपना पीताम्बर और दाऊ दादा ने अपना नीलाम्बर फहराया और कहा- मथुरावासियो, देख लो, कंस के विश्व विजयी पहलवान चाणूर, मुष्टिक और शल, तोशल को खेल-खेल में समाप्त करने वाले हम कृष्ण-बलराम हैं, हमसे बड़ा कोई मल्ल, कोई वीर हो, जिसकी मैया ने दूध पिलाया हो तो आ जाये मेरे सामने | ठाकुर जी ने विजय का पटका फहराया और ताल ठोंकी | इतना देखते ही सुबल सखा तो कूद पड़ा दाऊजी के सामने और मधुमंगल कूद पड़ा ठाकुर जी के सामने | सुबल ने दाऊजी को उठाकर नीचे गिरा दिया और मधुमंगल ने ठाकुर जी को नीचे गिराकर चारो खाने चित्त कर दिया और वे कहने लगे कि उस्ताद अर्थात अपने गुरु के सामने ऐसा कहा जाता है कि जिसने अपनी मैया का दूध पिया हो, वह आ जाये मेरे सामने | तूने तो अपने गुरु की नेक भी मर्यादा नहीं रखी | देख लो ब्रजवासियो, देख लो मथुरावासियो ! विश्वविजयी पहलवान को मारने वाले हमारे कृष्ण-बलराम और इन्हें खेल-खेल में चारों खाने चित कर देने वाले मधुमंगल और सुबल सखा, अब किसी की हिम्मत

हो तो हमारे सामने मल्लयुद्ध करने आ जाओ | ठाकुरजी से वे बोले - तुम्हारी हिम्मत हो तो हमसे लड़ लो | दाऊजी व ठाकुर जी ने कहा - भैया मधुमंगल, भैया सुबल ! हम तो सदा से ही तुमसे हारे हुए हैं, हमारी तो तुमसे हारने में ही शोभा है | हमारा बल तो केवल असुरों के लिए है, अपने सखाओं के लिए हमारा बल नहीं है | हम तो तुम्हारे दास हैं | इसके विपरीत हम लोग रामकृष्ण के भक्त होकर स्वयं श्रेय लेने की लड़ाई लड़ रहे हैं | नहीं, श्रेय तो गौ माता को, श्रेय राधारानी को व ठाकुर जी को देना चाहिए | पूज्य श्री रमेश बाबा जी के जीवन में जो भी सफलता हुई है, असंभव कार्य भी सिद्ध हुए हैं, उसका एकमात्र कारण है कि बाबा के पास अपना कोई बल नहीं है, बाबा के पास अपना भरोसा नहीं है, एकमात्र हरिनाम का अनंत बल है उनके पास | उनकी प्रेरणा से हजारों गावों में प्रभात फेरियाँ चल रही हैं, केवल हरिनाम का, श्रीजी के नाम का बल है उनके पास | वे सदा गाते रहते हैं – राधे किशोरी दया करो | उनके पास किशोरी श्री राधारानी की कृपा का, उनकी करुणा का बल है और उस बल से बाबा ने चमत्कारिक कार्य एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है | १०-११ साल का अल्प समय क्या होता है ? आज इतनी बड़ी संख्या में गोष्ठ (गौशाला) को यहाँ प्रतिष्ठित करके उन्होंने समाज को यह बता दिया कि भैया !

करी गोपाल की सब होय |

जो अपनों पुरुषारथ माने, मिथ्या बकवादी है सोय ||

इन संत ने सूरदास जी की इस वाणी को चरितार्थ करके दिखा दिया | आज भी किसी से कोई लाग-लपेट नहीं है, क्यों, उन महापुरुष के मन में अणुमात्र भी स्वार्थ की भावना नहीं है | अब हम अपनी बात को पूरा करें कि आज हम लोग विफल क्यों हो गये ? हर काम में हम विफल क्यों हो रहे हैं? हम अपनी आवाज उठाते हैं फिर आवाज उठने के बाद सहयोग लेते हैं | कभी अमुक यूनियन का, कभी अमुक यूनियन का सहयोग लेते हैं जबकि उन सबके अपने-अपने स्वार्थ भी होते हैं | ये लोग ईमानदारी से लक्ष्य की पूर्ति के लिए नहीं अपितु अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए जुटते हैं अथवा किसी के प्रति अपने राजनैतिक विद्वेष की आग को बुझाने के लिए प्रस्तुत होते हैं कि लीडर तो हम ही हैं, चलो अपनी रोटी सेंक लें और इस तरह हम लोग विफल हो जाते हैं | देश की, राष्ट्र की सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान गौवंश के संरक्षण से ही संभव है, लेकिन उसका उपाय यही है कि एक अखिल भारतीय गौ संरक्षण का संगठन हो, उसे गौ प्रजातंत्र कहो, गोलोक तंत्र कहो या गोसेवक संघ कहो, किसी भी रूप में एक ऐसा संगठन देश में निर्मित होना चाहिए जो किसी राजनैतिक दल के पराश्रित न हो, जो किसी समूह या अन्य संगठन के पराश्रित न हो, जो गाय की बात को स्वतंत्रता पूर्वक और स्वाभिमान पूर्वक रख सके और इस प्रकार के संगठन के अभाव के कारण ही १९६६ का गौरक्षा आन्दोलन विफल हो गया था | यमुना जी के आन्दोलन को भी हम पूर्ण सफल नहीं मानेंगे | हर जगह कहीं न कहीं हम लोगों को मार खानी पड़ी और **इसलिए एक संगठन जब हो जायेगा कि पहले गाय की रक्षा का एक महत्वपूर्ण प्रश्न, उसका समाधान जब हो जायेगा तो हमें विश्वास है कि उस एक के माध्यम से उससे जुड़े हुए सारे विषयों का समाधान हम अवश्य कर लेंगे |** उस गौ प्रजातंत्र का, गौ सेवक संघ का, गोलोक तंत्र का स्वरूप क्या होगा ?

उदाहरण के लिए जैसे हम लोग बरसाना में बैठे हैं तो यहाँ नगर पंचायत है, अतः बरसाना नगर पंचायत से हम आरम्भ करते हैं और राधारानी चाहेंगी तो यहीं से आरम्भ हो भी जायेगा | बरसाना नगर पंचायत में जो-जो गौ-उपासक-गौभक्त-गौसेवक हैं, उनकी एक सूची तैयार कर ली जाये और वे गौभक्तजन एक जगह बैठकर एक गौसेवा प्रमुख का चयन करें | अब इस प्रकार एक गाँव

में, एक नगर में नगर पंचायत के लिए प्रमुख गौ-सेवक का चयन हो गया | बिना किसी खर्च के, बिना किसी विज्ञापन के और बिना किसी धन के अपव्यय के हमने चयन कर लिया | इसके लिए कोई पर्चा नहीं छपवाना है, पोस्टर नहीं छपवाना है, कुछ नही करना है और चयन हो गया | अब हम बरसाना से आगे बढ़ते हैं, उन-उन ब्लॉकों में सम्पर्क करके उन-उन गाँवों के प्रमुख मिलकर के, उन गाँवों के जो गौसेवक प्रमुख हैं, वे मिलकर एक ब्लाक प्रमुख गौसेवक को चुन लें, फिर जनपद में जितने ब्लॉक हैं, उनके ब्लॉक प्रमुख को एक जनपद के गौसेवक प्रमुख को चुनना चाहिए और एक जनपद प्रमुख मान लो कोई मथुरा जनपद प्रमुख हो गया, अब मथुरा जनपद प्रमुख होने के बाद हम आगे बढ़ें और फिर इसी पद्धति का आश्रय लेकर हमने उत्तरप्रदेश के सभी जनपदों में ग्राम पंचायत से लेकर नगरपालिका तक संगठन बनाकर खड़ा कर दें, अब सभी जनपद प्रमुख मिलाकर एक प्रांत गौसेवक प्रमुख को चुन लें और एक प्रांत में यह काम अवश्य होना चाहिए | अभी बहुत अच्छा अवसर है | उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगीजी तो महात्मा हैं | भले ही मुख्यमंत्री हैं लेकिन हैं तो साधु, वे संत-वेष में हैं | हम उन पर विश्वास व्यक्त करते हैं, हाल ही में उन्होंने प्रदेश में गौसेवा के लिए अच्छी घोषणायें की हैं | हम लोगों को उनका सहयोग करना चाहिए | यदि ऐसा करते हैं तो योगीजी के शासन काल में ही, थोड़े समय में गौसेवा के सम्बन्ध में बहुत अच्छा कार्य हो सकता है, केवल कुछ लोगों को इस अच्छे कार्य में लगने की आवश्यकता है, थोड़ा समय तो देना ही पड़ेगा | अब मान लो कि उत्तरप्रदेश गौ-सेवा प्रमुख का चयन हो गया, इसी पद्धति से भारत के सभी प्रान्तों के गौसेवा प्रमुखों का चयन होना चाहिए | यह आवश्यक नहीं है कि कहाँ कितनी संख्या है | सीमांत क्षेत्रों में भी हमें जाना चाहिए, वहाँ बहुत कम लोग हैं, कोई बात नहीं | मान लो एक जिले में पाँच लोग ही चुनकर आते हैं तो चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है | पाण्डव पाँच थे और कौरव सौ थे लेकिन युद्ध तो पांडवों ने ही जीता | इसलिए संख्या की क्या परवाह करना, भले ही हम मुट्ठी भर हों लेकिन वे मुट्ठी भर लोग ऐसे हों कि उनमें से एक भी उँगली बाहर न निकले, वह मजबूत मुट्ठी हो, उसमें हमारी पूरी शक्ति हो, संगठित शक्ति हो | जैसा कि शास्त्र में कहा गया है – **"संघे शक्तिः कलौ युगे |"** अब देश के सभी प्रांत गौसेवक प्रमुख मिलकर के एक 'राष्ट्र गौ-सेवक प्रमुख' को चुन लें | बिना एक कौड़ी खर्च के पूरे देश में गौ-सेवकों का, गोलोक तंत्र, गौ-प्रजातंत्र का एक संगठन बनके तैयार हो जायेगा | राधारानी कृपा करें, यह काम जल्दी हो जाये, यह काम जिस दिन हो जायेगा, उस समय किसी राजनैतिक दल, किसी भी पार्टी की सरकार हो, पहले उसे गौसेवा-गौरक्षा की व्यवस्था बनानी पड़ेगी, उसके बाद वह पार्टी सत्ता की कुर्सी पर बैठ सकेगी | जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक राजनैतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए हमको बार-बार ठगा जायेगा, छला जायेगा, झूठे वादे किये जायेंगे और हमारी शक्ति बिखरती चली जायेगी |

हमारे गुरुदेव ने कहा था कि मधूकरी (भिक्षान्न) बड़ी शुद्ध होती है, तुम जीवन भर भिक्षा माँगना और उसी का भगवान् को भोग लगाना, यह मत सोचना कि यह भगवान् को भोग लगाने लायक नहीं है, वस्तुतः तो अन्याश्रय की वस्तु भगवान् स्वीकार नहीं करते |

प्राणीमात्र की परमहितकारी 'गाय'

(गौ-महामहोत्सव में दिया गया व्यासाचार्या श्रीमुरलिकाजी का वक्तव्य)

संकलनकर्त्री एवं लेखिका बालसाध्वी शिवानी जी, दीदीजी गुरुकुल, मानमंदिर, बरसाना

श्रीमाताजी गौशाला में आयोजित 'गौभक्ति महोत्सव' कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धेय मलूकपीठाधीश्वर श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज की गौभक्तमाल कथा के दौरान ७ जनवरी, २०१९ को मानमंदिर सेवा संस्थान की परम विदुषी एवं परम निष्किंचन श्रीमद्भागवत प्रवक्त्री साध्वी मुरलिकाजी ने भी मंच पर पधारकर गौभक्त श्रोताओं को संबोधित किया | आपका परिचय देते हुये मानमंदिर संस्थान के प्रबंधक श्रीराधाकान्त शास्त्रीजी (भैयाजी) ने कहा, "हमारे मानमंदिर सेवा संस्थान की बाल विदुषी साध्वी मुरलिकाजी, जो कि अंतर्राष्ट्रीय भागवत वक्त्री हैं और जिन्होंने अपनी कथाओं के माध्यम से देश भर में कई गौशालायें स्थापित की हैं; उनका जीवन इतना पावन है कि दस वर्ष की उम्र से ही आप निरन्तर गौ-सेवा एवं ब्रज-सेवा के लिए समर्पित भाव से लगी हुई हैं | हम उनके चरणों में प्रार्थना करते हैं कि वे थोड़ा-सा समय देकर गौ-भक्ति, गौ-सेवा के सन्दर्भ में श्रोताओं को संबोधित करें | श्रीभइयाजी के अनुरोध पर साध्वीजी ने श्रोताओं के समक्ष अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये – "हम सभी लोगों का यह परम सौभाग्य है कि श्रीमाताजी गौशाला की इस परम मंगलमयी भूमि पर पूज्य श्रीराजेन्द्रदास जी महाराज जी का पदार्पण हुआ है, जो गौभक्ति, गौसेवा का प्रकट स्वरूप हैं | जिनके उच्चारण और आचरण की एकता श्रोताओं के हृदय को प्रभावित करने वाली है | आपका मंगलमय दर्शन, सान्निध्य और मंगलमयी कल्याणकारिणी वाणी सुनने का सौभाग्य सभी बरसानावासी और यहाँ के निकटवर्ती क्षेत्र के ब्रजवासियों को मिल रहा है | श्रीमाताजी गौशाला परम श्रद्धेय परम विरक्त पूज्य श्रीश्री बाबामहाराज के पावन निर्देश और संरक्षण में चल रही है | वस्तुतः उनकी अनीहा (निष्कामता) ही इस विशाल गौवंश का रक्षण-पोषण कर रही है | जैसा कि श्रीभागवतजी में उल्लेख है

धर्मार्थमपि नेहेत यात्रार्थं वाधनो धनम् ।
अनीहानीहमानस्य महाहेरिव वृत्तिदा ॥

(श्रीमद्भागवतजी ७/१५/१५)

एक वृत्ति होती है अनीहा वृत्ति अर्थात् अपनी जीवनयात्रा के लिए तो कोई धन की इच्छा की ही न जाए, यहाँ तक कि धर्म के लिए भी धन की इच्छा न की जाए | इस कठोर विशुद्ध भागवत धर्म पर चलते हुये पूज्य श्रीबाबामहाराज जैसे महापुरुष को हम सभी लोग देख रहे हैं, यह श्रीजी की एक विशेष कृपा है और इस युग में उनकी अनीहावृत्ति का ही एक चमत्कार है, परिणाम है जो आज इतने विशाल गौवंश के रूप में हम लोग देख पा रहे हैं | आज गौमाता की श्रेष्ठता व नृशंस गौवध - इन दोनों ही बातों से समाज अपरिचित नहीं है | सब लोगों को पता है कि गाय की क्या श्रेष्ठता है और आज गौवंश का किस नृशंसता से और कितने बड़े स्तर पर वध हो रहा है | भारत जैसे गौभक्त राष्ट्र में गौसंरक्षण-गौसंवर्द्धन के लिए संघर्ष करना पड़े, आन्दोलन करने पड़ें, गोष्ठियाँ करनी पड़ें, यह एक बहुत आश्चर्यजनक बात है, साथ ही इस युग की एक आवश्यकता भी बन गयी है | वस्तुतः अभी तक हम लोग अपने कर्तव्यपालन से परिचित नहीं हो पा रहे हैं | एक बार मदनमोहन मालवीयजी से 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' के एक छात्र ने पूछा, "महामना ! आप तो धर्म की साक्षात् मूर्ति हैं, आप बताइये कि धर्म का

स्वरूप क्या है, आप धर्म को किस दृष्टि से देखते हैं ?" श्रीमदनमोहन मालवीयजी ने उत्तर दिया, "धर्म को जहाँ हमारे शास्त्रों ने, हमारे पुराणों ने उसके विविध अनुष्ठान, विविध अंग आदि को बहुत विस्तार से कहा है, उसको यदि मैं एक शब्द में कहूँ तो वह है - **कर्तव्यपालन** |" कर्तव्यपालन का नाम ही धर्म है | आज लोग कर्तव्य-पालन से च्युत हो रहे हैं, दूर जा रहे हैं, भाग रहे हैं | कोई वर्णाश्रमी कर्तव्य के प्रति निष्ठावान दिखाई नहीं दे रहा है, यह एक बहुत बड़े दुःख की बात है | और यदि कोई कर्तव्यपालक होता तो गौसंरक्षण-गौसंवर्द्धन के लिए बार-बार प्रेरणास्पद बातें कहने-सुनने की आवश्यकता ही न रहती | वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड का अत्यंत श्रेष्ठ प्रसंग है – जिस समय श्रीहनुमानजी महाराज ने लंका पहुँचने के लिए समुद्र पार किया है तो समुद्र ने पर्वत श्रेष्ठ मैनाक से कहा, "देखो, किसी समय इक्ष्वाकुवंशियों ने मुझे बढ़ाया था | महाराज सगर ने मेरी वृद्धि की थी, जिससे मेरा नाम 'सागर' हुआ | उसी इक्ष्वाकुवंश के यशस्वी राजा साक्षात् भगवान् श्रीरघुनाथजी, जिनकी सेवा के लिए श्रीहनुमानजी आये हैं, मैं चाहता हूँ कि उनका कुछ सत्कार करूँ | हे मैनाक ! तुम्हारे अन्दर यह सामर्थ्य है कि तुम चाहे जितने विशाल, जितने उन्नत, जितने भी चौड़े हो सकते हो अतः तुम खड़े होकर हनुमानजी का मार्ग रोको | मैनाक ने पूछा, "मैं क्यों उनका मार्ग रोकूँ?" समुद्र ने कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे उच्च शिखर पर हनुमानजी कुछ देर विश्राम करें, जिससे वे अपनी शेष यात्रा को पूरा कर सकें |" मैनाक पर्वत ने जब समुद्र की आज्ञा से अपने शिखर बढ़ाना प्रारम्भ किया तो हनुमानजी इतने बलिष्ठ थे कि उन्होंने अपनी छाती के धक्के से ही शिखर को तोड़ दिया | तो मैनाक ने हनुमान जी से करबद्ध प्रार्थना की कि प्रभो ! आपका मार्ग अवरुद्ध करना मेरा लक्ष्य नहीं है, मेरा लक्ष्य तो इतना ही है कि समुद्र आपका सत्कार करना चाहता है, इसलिए मुझे भेजा है कि आप कुछ देर तक मेरे शिखर पर विश्राम करिये | वहाँ मैनाक ने कहा है – '**कृते च प्रतिकर्तव्यं एष धर्मः सनातनः**' | अपने उपकारी के प्रति उपकार करना, उसके प्रति कृतज्ञता का भाव रखना ही सनातन धर्मावलम्बी का परम कर्तव्य है | गाय सृष्टि की एक ऐसी प्राणी है जिसका रोम-रोम श्रीठाकुरजी ने उपकारमय बनाया है | गाय के प्रति हम लोग कितने उपकारी सिद्ध हो रहे हैं या गाय के प्रति हमारे हृदय में कितनी कृतज्ञता है, स्वयं विचार करके देखो | और यदि गाय के प्रति हमारे हृदय में कृतज्ञता नहीं है तो धार्मिक कहलाने का, स्वयं को सनातनधर्मावलम्बी कहलाने का, भारतीय कहलाने का हम लोगों को कोई अधिकार नहीं है | केवल दूध, दही, घृत या पंचगव्य देने का ही उपकार गाय से नहीं हो रहा है, जिस दैवी जीव का मल-मूत्र तक, जिसकी मात्र उपस्थिति, जिसका रोम-रोम, जिसकी श्वांस-प्रश्वांस भी परमार्थ के लिए हो रही हो, जीवों के लाभ के लिए हो रही हो, उस गाय के प्रति आज हम लोगों का क्या व्यवहार, क्या भावना, क्या कुछ रह गया है, विचार करके देखो | जर्मनी के एक प्रसिद्ध चिकित्सक, प्रसिद्ध शोधकर्ता हुये हैं, जिनका नाम था डॉ. जूलिशस, उन्होंने अपने शोध के द्वारा पता लगाया कि गाय जो श्वांस छोड़ती है, उसमें ऑक्सीजन होती है | मल-मूत्र ही नहीं अपितु इनकी उपस्थिति ही, इनका श्वांस लेना और छोड़ना ही संसार के समस्त जीवों के लिए प्राणशक्ति का कार्य कर रहा है | भगवान् ने श्रीमद्भागवत में ग्वालबालों को वृक्षों का दर्शन कराते हुए शिक्षा दी –

पश्यतैतान् महाभागान् परार्थैकान्तजीवितान् |
वातवर्षातपहिमान् सहन्तो वारयन्ति नः ||

(श्रीमद्भागवतजी १०/२२/३२)

हे ग्वालबालो ! देखो, जीवन है तो इन वृक्षों का, महाभाग्यशाली हैं ये क्योंकि ये दूसरों के हित के लिए

खड़े हैं | ये हम लोगों के लिए जाड़ा, वर्षा, धूप और आँधी-तूफ़ान सहते हैं |

एतावज्जन्मसाफल्यं देहिनामिह देहिषु |
प्राणैरर्थैर्धिया वाचा श्रेय एवाचरेत् सदा ||

(श्रीमद्भागवतजी १०/२२/३५)

शरीरधारियों में केवल उनका ही जीवन सफल है और इतने मात्र से ही जीवन सफल है कि जिनके प्राण से, जिनकी सम्पत्ति से, जिनकी इंद्रियों से, जिनकी वाणी से एकमात्र परमार्थ ही होता है, वस्तुतः उनका जीवन ही जीवन है | इन सब सिद्धांतो के दृष्टिगत यदि गौवंश को देखा जाये तो गाय के जैसा परोपकारी, गाय के जैसा परमार्थ करने वाला, उसके टक्कर का, उसकी जोड़ का सृष्टि में एक भी जीव दिखाई नहीं देता | यह कितनी आश्चर्यजनक और दुःखद बात है कि ऐसे प्राणी के लिए हमलोग उपयोगिता ढूँढ़ते हैं और कहते हैं कि गाय की क्या उपयोगिता है .....!!!

स्वामी विवेकानन्दजी कहा करते थे कि किसी भी समस्या को दूर करना है तो पहले उसकी जड़ में जाओ, किसी रोग की चिकित्सा करना है तो केवल ऊपरी मलहम-पट्टी और औषधि का लेप करने से रोग ठीक नहीं होगा, आखिर शरीर में किस तत्त्व की कमी से वह रोग हुआ, उसकी जड़ का निरीक्षण करो | गौवध जैसी दुर्दांत समस्या यदि इस देश से दूर करनी है तो उसके लिए देशवासियों के मन-मष्तिष्क में एक वैचारिक परिवर्तन होना परमावश्यक है | आजकल के कृषि विशेषज्ञ सोचते हैं कि गाय, विशेष रूप से वृषभ (बैल) एक अनुपयुक्त जीव है | उसको खिलाने से देश का खर्चा बढ़ता है | जो गाय दूध दे रही है, वह तो ठीक है, बाकी तो गौमाँस का जितना निर्यात किया जाये, उससे ही देश को आर्थिक लाभ होता है | ऐसा आज के कृषि विशेषज्ञों का मानना है | जरा देखें कि इनके विचारों में कितना भारी प्रदूषण है | इन मूर्खों को कौन बताये कि बड़े-बड़े वैज्ञानिकों ने शोध करके सिद्ध किया है कि केवल एक गाय अपने जीवन में चार लाख दस हजार चार सौ चालीस (४१०४४०) मनुष्यों का एक समय का पेट भर सकती है जबकि गाय के मरने पर उसके माँस से मात्र ६० लोगों का पोषण हो सकता है | आजकल के वित्त अधिकारी सोचते हैं कि वृषभ का तो कोई उपयोग ही नहीं है | इस देश के संविधान में ऐसे नियम बनाये गये हैं जहाँ गौवंश को, वृषभ को जान से मारने की स्वीकृति दी गयी है | ऐसी स्थिति में यदि हम देश की प्रगति के, इसके विकास के सपने संजोये तो संजोते रहें, कभी भी इस देश की उन्नति होने वाली नहीं है | 'वन-अधिकारी' सोचते हैं कि यदि गाय जंगल में जायेगी तो उसे नष्ट कर देगी | आज पर्वतों को देखो तो वे मुंडे हो गये हैं, पर्वतमालाओं पर कहीं वृक्ष दिखाई नहीं देते हैं | आज इस देश की **५४** प्रतिशत भूमि बंजर हो गयी है क्योंकि इस भूमि को अपना आहार नहीं मिल रहा है, इसकी उर्वरा शक्ति समाप्त हो रही है | एक समय था जब भारत में गायें गोचर भूमि में निर्भीक विचरण करती थीं; गोबर छोड़ती थीं तो मिट्टी सोना उगलती थी; आज तो भूमि की कोयला उगलने की भी स्थिति नहीं रह गयी है | ऐसी दर्दनाक और ऐसी दुःखद दशा हो गयी है, हम लोगों को इस पर ध्यान देना चाहिए | यहाँ तक कि भौतिक शास्त्र के ज्ञाता भी कह रहे हैं कि जब बहुत बड़ी संख्या में किसी जीव की हत्या होती है तो उस समय जो उसके मुख से चीख निकलती है, आधुनिक विज्ञान कहता है कि उससे स्ट्रेस हार्मोन्स निकलते हैं और उन चीखों का वायुमंडल पर ऐसा प्रभाव पड़ता है कि वायुमंडल में कुछ विशेष तरंगे तरंगायित होती हैं जो मनुष्य के हृदय को दुष्प्रभावित करती हैं और वे तरंगे जब लोगों के हृदय में

तरंगायित होती हैं तो उससे नकारात्मक भाव आते हैं, लोग depression (एक प्रकार का विषादग्रस्त कर देने वाला मानसिक रोग) के शिकार हो जाते हैं, इतना ही नहीं उससे हिंसावादी स्वभाव जैसे उग्रवाद-आतंकवाद आदि बढ़ता है, दूसरों को मारने की इच्छा उत्पन्न होती है, यह सब स्ट्रेस हारमोन्स का (shocking waves) दुष्प्रभाव है कि आज संसार में कितने ही लोग मानसिक रोग (depression) का शिकार हो रहे हैं, मानसिक तनाव पर तनाव बढ़ता ही जा रहा है | इसके विपरीत यदि गौवंश के शरीर का कोई स्पर्श कर ले, उसकी परिक्रमा कर ले तो, आधुनिक विज्ञान कहता है – बहुत बड़े परमाणु वैज्ञानिक डॉ. मंगलमूर्ति कहते हैं कि यदि गाय की कोई परिक्रमा कर ले तो, उसके शरीर का, उसके मुखमंडल का एक आभामंडल, जिसको aura कहते हैं जो कि सात्विक ऊर्जा का प्रमुख स्त्रोत है, बढ़ जाता है | अपना विनाश हम लोग स्वयं कर रहे हैं | किन्तु ऐसी स्थिति में भी इन महापुरुषों के द्वारा सदा से ही धर्म का, गौवंश का संरक्षण होता आया है | जब गयासुद्दीन तुगलक का शासन काल था तब स्वामी रामानन्दाचार्य जी महाराज ने गोवंश का संरक्षण कराया, अकबर से स्वामी हरिदास जी ने गोवध पर प्रतिबन्ध लगवाया | शाहजहाँ के समय में श्रीमलूकदासजी ने भी गोवंश के वध पर प्रतिबन्ध लगाया और आज भी जो कुछ भी गौवंश सुरक्षित दिखाई दे रहा है, उसके मूल में महापुरुषों की कृपा ही है | हमारे पूज्य श्रीबाबाजी महाराज, जिनकी गौ-सेवानिष्ठा को आज हम लोग 'श्रीमाताजी गौशाला' में इतने अधिक विशाल गौवंश के रूप में देख रहे हैं, पूज्य श्रीराजेन्द्रदास जी महाराज, जिनके द्वारा आज इस राष्ट्र में गौभक्ति-गौसुरक्षा की एक अलक जगी है और कई महानुभावों की प्रेरणा से आज लोगों ने किसी अंश में गायों की सुरक्षा और गौवध के प्रति व्यथा प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर दिया है | यह भी एक बहुत बड़ी सफलता है | सफलता का मतलब यही नहीं है कि कोई सोचे कि अभी तक तो बड़े-बड़े कत्लखाने खुले हुये हैं, इन पर प्रतिबन्ध नहीं लग पा रहा है, इसलिए गौरक्षा से सम्बन्धित गोष्ठियों और सम्मेलनों का क्या लाभ है? ये भी एक सफलता है कि हम गाय की उपयोगिता को समझ पा रहे हैं या गौवध को निषेध मान रहे हैं, गौसेवा से सम्बन्धित गोष्ठियों की एक बहुत बड़ी सफलता है और आज यह सफलता इन महापुरुषों की कृपा से दिखाई पड़ रही है | गाय वस्तुतः केवल एक विशेष वर्ग अथवा विशेष वर्ण के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि गाय तो पूरे विश्व की एकात्मता का सूत्र है | हम सभी लोगो को गौवंश की सुरक्षा और संवर्धन पर बहुत गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए, ध्यान देना चाहिए, इसी में समग्र विश्व का, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का कल्याण है |

यदि तुम किसी प्राणी का अपराध नहीं कर रहे हो तो तुम्हारी सभी परिस्थितियाँ सफल हो जायेंगी, सिद्ध हो जायेंगी; नहीं तो सब परिस्थितियाँ विपरीत हो जायेंगी, जैसे रावण के पास कितनी बड़ी सेना थी लेकिन कोई काम नहीं आया, सब असफल रहे क्योंकि –

बिफल होहिं सब उद्यम ताके ।
जिमि परद्रोह निरत मनसा के ॥

(रा.मा. लंका. ९२)

कनाडा के इन्टरव्यू में हुआ व्यासाचार्या मुरलिकाजी का जाग्रतकारी आध्यात्मिक उद्‌बोधन

संकलनकर्त्री एवं लेखिका बालसाध्वी काजल जी, दीदीजी गुरुकुल, मानमंदिर, बरसाना

प्रश्नकर्ता – मुरलिका जी, सबसे पहले यह बताइए कि अध्यात्म की तरफ आपका सफर कैसे शुरू हुआ क्योंकि आज की दौड़ भरी जिन्दगी में इन्सान दौड़-भाग रहा है और जब धर्म की बात आती है तो लोग सोचते हैं कि कुछ देर के लिए किसी मंदिर, गुरुद्वारे आदि में चले जायें, वहाँ बैठें और हमारा काम पूरा हो जाये लेकिन आपने जो धर्म का, अध्यात्म का रास्ता चुना, वह कैसे चुना?

मुरलिकाजी – मैं श्रीधाम बरसाना, मानमन्दिर से हूँ और ये मेरा सौभाग्य है तथा राधारानी की कृपा है, मेरे गुरुदेव की कृपा है कि मुझे एक बहुत आध्यात्मिक परिवार मिला, भक्तिमय परिवार मिला, जहाँ पीढ़ियों से, मेरी दादी के समय से बड़ा ही भक्ति का वातावरण मिला, मेरी दादी बड़ी ही संत-सेवी थीं | मेरे गुरुदेव, जो इस समय बरसाना में विराजते हैं, उनको ६५ वर्ष हो गये वहाँ निवास करते हुये और वह ब्रज के बाहर नहीं जाते हैं और बरसाना में ही अखंडवास करते हुए साधना कर रहे हैं | वह १६ वर्ष की आयु में ही गृह-त्याग कर बरसाना आ गये थे; ये सब दैवी आत्मायें होती हैं, जो युग परिवर्तन के लिए, संसार में किसी विशेष कार्य के उद्देश्य के लिए आती हैं | महाराजजी का सानिध्य मुझे बचपन में ही मिल गया | मेरे पूज्य ताऊजी हैं डॉ. रामजीलाल शास्त्री, जो विगत ४० वर्षों से भागवत कथा कह रहे हैं, उनका मार्गदर्शन मुझे मिला, अपने गुरुदेव का मार्गदर्शन मिला और प्रारम्भ से ही घर पर मुझे भक्ति का माहौल मिला तो निश्चित है, स्वाभाविक है कि भक्ति की विचारधारायें, आपका बौद्धिक स्तर उसी तरह से बनने लग जाता है | जब मैं १० वर्ष की थी, कुछ रुझान तो आरम्भ से था ही और उसी समय गुरुदेव की भी आज्ञा हुई विशुद्ध रूप से भक्ति प्रचार करने की क्योंकि आजकल के युग में भक्ति के विशुद्ध प्रचार की बहुत अधिक आवश्यकता है | जहाँ हम देखते हैं कि जब भक्ति की, धर्म की बात होती है तो यह हमारे समाज की विकृति है कि बहुत व्यापारीकरण हो गया है | ऐसी स्थिति में हमारे गुरुदेव की इच्छा थी कि निःस्वार्थ भाव से धर्म अथवा भक्ति का प्रचार करने वाले प्रचारक बनें, बिना धन और सम्मान की इच्छा के, बिना यश की इच्छा के विशुद्ध भक्ति का प्रचार ही जिनका लक्ष्य है | उनके (पूज्य गुरुदेव के) सानिध्य में वहाँ (श्रीमानमन्दिर, बरसाना में) सैकड़ों ऐसे प्रचारक हैं, केवल मैं ही नहीं हूँ | मेरी छोटी बहन हैं श्रीजी शर्मा, वह पिछले तीन वर्षों से फिजी में प्रचार कर रही हैं | मानमन्दिर में एक गुरुकुल है, जिसमें २०० बच्चे रहते हैं, वे सभी प्रचारक हैं, उन्होंने भारतवर्ष के ३५ हजार गाँवों में क्रान्ति कर रखी है, उन गाँवों में प्रतिदिन नियमित रूप से प्रभात फेरी होती है, जिसमें भक्तजन गाँव में घूमकर लगभग १-२ घण्टे तक नाम-संकीर्तन किया करते हैं, सुबह ५ बजे से उठकर लगभग १००-२०० लोग प्रतिदिन नगर-संकीर्तन करते हैं | इन ग्रामवासियों को नगर संकीर्तन के लिए हमारे महाराज जी की ओर से हजारों गाँवों में निःशुल्क ढोलक और मेगामाइक भी दिए गए हैं | इस प्रकार महाराज जी की कृपा से इन सब प्रचारकों के द्वारा विशुद्ध लक्ष्य से भक्ति का प्रचार किया जा रहा है |

प्रश्नकर्ता :- बरसाना, जहाँ से आप हैं, यह क्यों प्रसिद्ध है ?

भगवान् के चरणों से विमुख होने पर आज तक किसी को सुख नहीं मिला।

मुरलिका जी - बरसाना भगवान् श्रीकृष्ण की आह्लादनी शक्ति, उनकी आत्मा श्रीराधारानी की जन्मभूमि है, एक तरह से बरसाना ब्रज का प्राण है और रस एवं भक्ति का केंद्र है | दूसरी बात, हमारे श्रीधाम बरसाने में स्वयं सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी ब्रह्माचल पर्वत के रूप में विराजमान हैं | ६० हजार वर्षों तक उन्होंने तपस्या की और श्रीराधारानी से यह वरदान माँगा कि मुझे ब्रजवासियों की चरण-धूल मिल जाए, इसके लिए आप मुझे ब्रज में कुछ भी बना दीजिये | श्रीराधारानी ने कहा कि पर्वत की आयु सबसे अधिक होती है, अतः आप मेरे बरसाने में पर्वत के रूप में विराजिये | इसलिए ब्रह्मा जी बरसाने में पर्वत के रूप में विराजे हैं | आज भी उस पर्वत का नाम ब्रह्माचल पर्वत है | जैसा कि हमलोग जानते हैं कि ब्रह्माजी के चार मुख हैं तो उस पर्वत की भी चार शिखरें हैं | एक-एक शिखर ब्रह्माजी के एक-एक मुख का प्रतीक है | चार शिखरों में एक शिखर है मानगढ़, वहाँ राधारानी ने मान किया | हमलोग उसी मानमंदिर से हैं | एक शिखर है भानुगढ़, जहाँ राधारानी का प्राकट्य हुआ, एक शिखर है दानगढ़, जहाँ श्यामसुंदर राधारानी से दान लेते थे और चौथा शिखर है विलासगढ़, जहाँ श्रीकृष्ण ने राधारानी के साथ झूलनलीला और रासलीला की है | इसी कारण से साक्षात् ब्रह्मा ही वहाँ पर्वत बने हैं और बरसाना श्रीराधारानी की जन्मभूमि व उनकी विशेष लीलास्थली है, इसलिए बरसाना ब्रज का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है |

प्रश्नकर्ता - आपने एक बहुत अधिक महत्व की बात कही निःस्वार्थ होकर समाज की सेवा करना क्योंकि समाज में एक समुचित संदेश पहुँचना बहुत आवश्यक है | हमें बहुत गर्व है कि सनातन धर्म के हमारे ग्रन्थों में दिव्य ज्ञान और भक्ति की शिक्षा दी गयी है और उनमें विश्व के कल्याण हेतु बहुत-सी हितकारी बातों का उल्लेख किया गया है परन्तु वर्तमानकालीन मानव की जो परिस्थिति है, उसके कारण हम उसे भूल चुके हैं | धर्म का उद्देश्य क्या है क्योंकि जब हम भगवद्गीता को पढ़ते हैं तो हमें पता चलता है कि जीवन को जीने का क्या मिशन है, एक मकसद है | गीता से उसे पढ़कर सीखना चाहिए, केवल गीता के श्लोकों को रटने से ही बात नहीं बनेगी, उन श्लोकों में निहित गूढ़ भावार्थ का अभ्यास करके जब हम आगे आयेंगे तभी हमारा वास्तविक कल्याण होगा यही शिक्षा हमारे धर्मगुरुओं, हमारे महापुरुषों ने भी दी है | आप तो बहुत अधिक प्रचार करतीं हैं तो हमें विस्तार से बताइये कि भगवद्गीता में ऐसी क्या-क्या चीजें हैं, जिन्हें एक साधारण मनुष्य को ग्रहण करके उसके अनुसार चलना चाहिए |

मुरलिकाजी – सबसे पहले तो मैं यह कहूँगी कि भगवद्गीता एक ऐसे ग्रन्थ से प्रगट हुई है, जिसका नाम है - महाभारत | भारतवर्ष का सबसे प्राचीनतम इतिहास है 'महाभारत' | यदि किसी को भारतवर्ष का अतीत, उसका इतिहास जानना है तो उसे महाभारत अवश्य पढ़ना चाहिए | महाभारत एक बहुत अधिक विस्तृत ग्रन्थ है, जो वेदव्यासजी महाराज द्वारा रचित है | वेदव्यासजी कौन हैं ? वह स्वयं भगवान् के २४ अवतारों में एक अवतार हैं अर्थात् वह स्वयं भगवान् हैं, उन्होंने महाभारत ग्रन्थ की रचना की और उसी महाभारत ग्रन्थ से श्रीगीताजी का प्राकट्य हुआ है | जैसा कि सब लोग जानते हैं कि जब महाभारत का युद्ध होने वाला था, कुरुक्षेत्र की रणभूमि में कौरव-पाण्डव , दोनों पक्षों की सेनायें परस्पर युद्ध के लिए तैयार होकर आमने-सामने खड़ी थीं, उस समय अर्जुन को मोह हुआ और इस सन्दर्भ में गीता के द्वितीय अध्याय के प्रारम्भ में ही लिखा है –

किसी की भी निन्दा करना, भगवान् की निन्दा है |

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः॥

(श्रीमद्भगवद्गीताजी २/१)

अर्जुन अत्यधिक विषाद में भर गये कि अरे ! ये तो मेरे गुरुदेव द्रोण हैं, ये मेरे पितामह भीष्म हैं, इनकी गोद में मैं खेला हूँ, इनसे मैंने शस्त्र की शिक्षा ग्रहण की है अतः मैं इनको कैसे मार सकता हूँ | उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि – **'भैक्ष्यमपीह लोके' –** युद्ध करने से अधिक श्रेष्ठ है कि भिक्षावृत्ति द्वारा मैं जीवन-निर्वाह करूँ परन्तु मैं ऐसा युद्ध नहीं कर सकता हूँ जिसमें मुझे अपने ज्येष्ठ-श्रेष्ठों के आगे शस्त्र उठाना पड़े | इस तरह युद्ध के प्रारम्भ में ही अर्जुन अत्यधिक विषादग्रस्त हो गये और उनका शरीर शिथिल हो गया तथा वह रथ के पिछले हिस्से में जाकर के बैठ गये और स्पष्ट रूप से कह दिया कि मैं युद्ध नहीं कर सकता | तब भगवान् ने अर्जुन को समझाया और कहा – "देखो अर्जुन ! तुम जिसको दया समझ रहे हो, यह दया नहीं है | दया दो प्रकार की होती है | एक होती है - विशुद्ध दया और दूसरी होती है - मोहज दया | जब आप किसी जीव के ऊपर निःस्वार्थ भाव से करुणा (दया) कर रहे हो तो वह विशुद्ध दया है और यदि आप मोह के कारण उसके ऊपर दया कर रहे हो तो वह मोहज दया है और वह ठीक नहीं है | अर्जुन वस्तुतः मोहज दया से ग्रसित हुए कि ये मेरे अपने हैं, ये मेरे दादा जी हैं, मेरे पितामह हैं, मेरे गुरुजन हैं और यह मोहज दया मनुष्य की स्थिति को इतना निम्न बना देती है कि इसीलिए भगवान् ने अर्जुन से कहा –

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप ॥

(श्रीमद्भगवद्गीताजी २/३)

अर्जुन ! यह तुम्हारी नपुंसकता है, यह तुम्हारी दुर्बलता है, यह वीरों का काम नहीं है कि इस प्रकार के मोह के आधीन होकर अपने हथियार छोड़ दे और विषादग्रस्त होकर के बैठ जाये | यह तो तुम्हारी कमजोरी है, इसे तुम अपनी महानता मत समझो, यह दया नहीं है और फिर भगवान् ने अर्जुन को उपदेश देना आरम्भ किया | १८ अध्यायों में श्रीभगवान् ने अर्जुन को श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश दिया है, जिसमें ७०० श्लोक हैं | मैं तो यह कहूँगी कि यह हमारा सौभाग्य है कि हम लोगों ने ऐसे उदार और विस्तृत सनातन धर्म के अंतर्गत जन्म लिया है, जिसकी उदारता सदियों से, हजारों वर्षों से मानव समाज द्वारा देखी और अनुभव की जा रही है | यहाँ यह कहना भी आवश्यक है कि भारतवर्ष में सनातन धर्म की उदारता के कारण ही 'विश्व युद्ध' रुका हुआ है, नहीं तो आज 'विश्व युद्ध' के इतने खतरे हैं क्योंकि अधिकांश देशों के पास महाविनाशक परमाणु बम की प्रक्रियायें उपलब्ध हैं, तैयार हैं | ऐसी हालत में तृतीय विश्वयुद्ध आरम्भ होने में कोई विलम्ब नहीं है किन्तु यह हमारे सनातन धर्म की उदारता है, महानता है कि इसकी यही विशेषता 'तृतीय विश्वयुद्ध' को रोके हुए है | हमारे सनातन धर्म का इतना अधिक विशाल साहित्य है कि जिस समय भारतवर्ष पर यवनों (मुसलमानों) का आक्रमण हो रहा था, उस समय कश्मीर के ग्रन्थागार में इन बर्बर नरपिशाचों ने आग लगा दी और ग्रन्थों की बहुलता के कारण छः महीने तक वहाँ आग जलती रही | वहाँ मुसलमान स्त्रियाँ हमारे ग्रन्थों को जलाकर उन्हीं पर रोटी सेंका करती थीं | इतने अधिक ग्रन्थ थे कि छः महीने तक आग बुझ नहीं पायी, जलती ही रही और उस ग्रंथालय में ऐसे-ऐसे विलक्षण ग्रन्थ थे, जैसे - भृगु मुनि की भृगु-संहिता, स्वयं रावण द्वारा रचित रावण-संहिता, ये ऐसे ग्रन्थ थे जिनको पढ़कर मनुष्य अपना भूत-भविष्य जान सकता था | मुस्लिम आतताइयों की नीचता के कारण आज इन ग्रन्थों का अभाव हो गया, ऐसे दुर्लभ ग्रन्थ अब नहीं रहे, यह बड़े दुःख की बात है | इतना विस्तार हमारे सनातनधर्म में है, इतने अधिक

इसके ग्रन्थ हैं कि मनुष्य उन्हें जीवन भर पढ़े तो उसकी आयु लघु प्रतीत होगी किन्तु साहित्य में लघुता नहीं होगी | सनातन धर्म के सभी ग्रन्थों को यदि कहा जाये कि इनका सार एक ग्रन्थ के रूप में बताओ तो वह ग्रन्थ है - श्रीगीताजी | यह सभी सनातन धर्मी ग्रन्थों का सार, उनका निचोड़ है | श्रीमद्भगवद्गीता का जिस-जिसने भी अध्ययन किया और उसकी गहराई तक जाकर जो भी उसके सिद्धान्तों को समझ सका, उसके वास्तविक तथ्यों को जान सका, वह पूर्णतया कृतकृत्य हो जाता है, उसका मानव-जीवन सफल हो जाता है | श्रीगीताजी को मोहविभंजनी कहा गया है | इसके द्वारा मनुष्यों की सकल व्याधियों के मूल मोह का नाश होता है | आज श्रीगीताजी ऐसा ग्रन्थ बन गया है कि दुनिया की कोई ऐसी भाषा नहीं है, जिसमें इसका अनुवाद न किया गया हो | जिसने भी इसे पढ़ा, इसे बहुत ही सराहा | भले ही श्रीमद्भगवद्गीता एक ऐसे स्थल से प्रकट हुई, जो अत्यधिक क्रान्तिकारी स्थान था, वहाँ ऐसा महायुद्ध हुआ जिसको लोग युगों-युगों तक नहीं भूल पायेंगे | लोग कहते हैं कि आज भी कुरुक्षेत्र की मिट्टी लाल है क्योंकि वहाँ इतना अधिक रक्त बहा था लेकिन इसके बावजूद भी यह हमारे भगवान् की विशेषता है या उनके ज्ञान का एक कौशल है कि उस भयावह युद्धभूमि से उन्होंने एक ऐसा ग्रन्थ निकाला, जो परम शान्ति का उपदेश देने वाला है | जिसने अर्जुन को भी बहुत आश्वस्त किया और उनके मोह को भंग किया | ऐसा गीताजी में कोई भी विषय नहीं है जो अछूता रह गया हो, चाहे वह कर्मयोग हो, भक्तियोग हो अथवा ज्ञानयोग हो | यदि आप सम्पूर्ण १८ अध्यायों का अध्ययन करेंगे तो आप यह देखेंगे कि प्रत्येक अध्याय का अपना एक विशेष नाम है, उनका एक परिचय है | किसी अध्याय का नाम विभूतियोग है, किसी का नाम राजयोग है, कोई कर्मयोग है, कोई भक्तियोग है |

प्रश्नकर्ता – आपका कहना है कि इन १८ अध्यायों में जीवन का ऐसा कोई भी पक्ष (प्रसंग) नहीं है, जो अछूता रह गया हो |

मुरलिकाजी – हाँ, ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान गीताजी में न किया गया हो | क्रमशः

सारा संसार मिलकर भी भक्त की क्षति नहीं कर सकता। जैसे मनुष्य अपने दोषों को कभी नहीं सोचता, अपने दोषों को कभी नहीं कहता, प्रह्लाद जी कहते हैं – उसी प्रकार मैं प्राणी मात्र के प्रति भाव रखता हूँ। पाप का हेतु मनुष्य का मन होता है। पाप का आगमन तो मेरे भीतर हो ही नहीं सकता क्योंकि पाप का हेतु ही मेरे पास नहीं है। पाप तुम्हारे भीतर रहता है अभाव रूप बनकर। अभाव है तो नित्यधाम वैकुण्ठ से भी नीचे आ जाओगे। (श्रीमद्भागवत ३/१५/३४) अभाव भीतर रहता है, बाहर से हम लोग भले बने रहते हैं। अभाव ही पाप है। भगवान् का एक नाम तार सकता है, एक नाम का स्मरण कर लो, सुन लो, कह लो – सब पाप नष्ट हो जाता है लेकिन कब? जब अभाव न रहे तब।

भक्तियुक्त-शिक्षा से ही सनातन संस्कृति का संपोषण सम्भव

संकलनकर्त्री एवं लेखिका बालसाध्वी हरिप्रेमा जी, दीदीजी गुरुकुल, मानमंदिर, बरसाना

भारतवर्ष का पहले (अतीत में) सारे विश्व में साम्राज्य था | 'सिन्धु' माने सिन्ध, आज जिसको पाकिस्तान कहते हैं | सिन्धु नदी के तट पर ही श्रीमद्भागवत में वर्णित रुद्रगीत का प्रकरण हुआ था | आज सारा भारत कट-कटके, जो कुछ था, वह भी नहीं रहा; नाममात्र के हम लोग हिन्दू रह गये हैं, भावना कुछ मालूम नहीं पड़ती | आज हम भारतीयों में राष्ट्रीयता की, भारतीयता की भावना नहीं रही; ऐसा विदेशी लोग भी कहते हैं | दो पैसे में हम लोग बिक जाएँगे, दो पैसे के लिए देश को नष्ट कर देंगे, संस्कृति को नष्ट कर देंगे, राष्ट्र को नष्ट कर देंगे केवल दो पैसे में | आज क्या हालत है भारतवर्ष की..!! धिक्कार है यहाँ के लोगों को और बड़े शर्म की बात है कि राम-कृष्ण की भूमि में ऐसा होता है | एक भी भारतीय ऐसा नहीं है जो गर्व से कहे कि हम अपने भारत के लिए सब कुछ लुटा देंगे | यह हालत है हम लोगों की | क्या किया जाए ? ऐसा क्यों है ? हजारों सालों से हम लोग गुलाम रहे | दुनिया में कोई भी देश इतने लम्बे समय तक गुलाम नहीं रहा और यह गुलामी ईसा के पहले से चली आ रही है | ईसा से ३०० वर्ष पूर्व भारत पर सिकंदर का आक्रमण हुआ, उसके पहले भी विदेशी जातियाँ भारत में आती थीं | विदेशियों में केवल यूनानी ही नहीं थे | हूण, कनिष्क आदि सब विदेशी थे | तब से बराबर हमलोग गुलाम ही बनते आये हैं | मुसलमानों के शासन के अंतर्गत भारत में गुलाम वंश आया, खिलजी वंश आया, तुगलक वंश आया, सैयद आये, लोदी वंश आया | सबसे अंत में मुग़ल आये | इस प्रकार असंख्य विदेशी आक्रान्ता इस देश में आये और हमलोगों के सिर पर दो-दो लात लगाते गये | हमलोग लतियल (लातों का प्रहार सहने वाले) बने रहे | इतने हजारों साल की गुलामी का यह प्रभाव है कि हमलोग मुर्दा हो चुके हैं | भारत में अंग्रेजों के शासनकाल के दौरान एक वरिष्ठ अंग्रेज अधिकारी विलियम ऐडम ने तत्कालीन भारतीय गुरुकुलों में पढ़ाई जाने वाली शिक्षा व्यवस्था पर एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की, उस रिपोर्ट में १७८० पन्ने हैं, वह रिपोर्ट ब्रिटेन की संसद में पेश की गयी | उस रिपोर्ट में उल्लेख है कि भारत के गुरुकुलों में आचार्य स्तर पर बहुत-सी स्त्रियाँ हैं, यह उनके लिए एक आश्चर्य व हैरानी की बात थी | वह कहता है कि हमारे समाज (ब्रिटेन) में विपरीत स्थिति है, हमारे यहाँ स्त्रियों का स्थान सबसे नीचे है इसलिए हमारे यहाँ हर काम में वे सबसे पीछे हैं; इस तरीके की कुछ बातें हैं जो मैकाले के documents (दस्तावेज) बताते हैं और विलियम ऐडम ने मैकाले से भी ज्यादा खोज की है, उसके documents मैकाले के documents से भी आगे की चीज बताते हैं कि भारत के जो गुरुकुल हैं, उन गुरुकुलों का क्या योगदान है समाज में ? विलियम ऐडम ने भारत के गुरुकुलों की कहानी लिखी है अपने दस्तावेजों में | आन्ध्रप्रदेश में कावेरी नदी के निकट विशाखापत्तनम से थोड़ा दूर एक गुरुकुल है, उसके बारे में ऐडम कहता है कि यह गुरुकुल बहुत प्राचीन है, उसके दस्तावेज पुराने हैं,१२ वीं शताब्दी का वह गुरुकुल है और वह सिविल इंजीनियरिंग का गुरुकुल है, construction (निर्माण) में सिविल इंजीनियरिंग का | विलियम ऐडम कहता है कि इस गुरुकुल के आचार्यों व विद्यार्थियों ने मिलकर कावेरी नदी पर एक डैम (बाँध) बनाया है, जो दुनिया का सबसे पहला बाँध है | राजीव दीक्षित - मुझे मालूम नहीं था, विलियम ऐडम के documents पढ़ने से पता चला कि दुनिया का सबसे पहला बाँध भारत में बना है, जैसा कि उसने अपने दस्तावेज में वर्णन किया है, उसके अनुसार खोजते-खोजते

मैं वहाँ पहुँच गया और अपनी आँखों से देखके आया कि वह बाँध अभी तक जीवित है | उस बाँध में तेलगू भाषा में एक पत्थर लगा है जिस पर तारीख अंकित है कि सन् १२३८ में (आज से लगभग ८०० वर्ष पूर्व) वह बाँध बनकर तैयार हुआ है, उस बाँध की विशेषता है कि वह पत्थर और चूने से बना है | दक्षिण भारत में 'कावेरी' सबसे अधिक प्रवाह वाली नदी है | कावेरी ऐसी नदी है कि बारहों महीने उसमें जल रहता है और जल का प्रवाह उसमें सबसे तेज है, पानी का दबाव भी उसका सबसे तेज है, उस नदी पर बाँध बना दिया गया, लगभग डेढ़ किलोमीटर तक उसकी लम्बाई है | बाँध का आकार Z की तरह है, Z आकार में पूरा बाँध बना है; विलियम ऐडम ब्रिटेन की संसद में वर्णन करता है कि इसे गुरुकुल के विद्यार्थियों और आचार्यों ने बनाया है | इसकी विशेषता है कि यह 'Z' आकार में है, सीधी लाइन में क्यों नहीं बनाया तो ऐडम कहता है कि इसका जवाब मुझे पता नहीं है | वस्तुतः इसका कारण यह है कि जब सीधी रेखा में आप कोई दीवार बनाएँ और पानी बहुत तेज गति से आये तो उसका दबाव इतना अधिक होता है कि दीवार टूट जाती है लेकिन यदि आप दीवार को टेढ़ा-मेढ़ा कर दो तो पानी का दबाव DIVERT(दिशा परिवर्तन) हो जायेगा और बाँध कभी भी नहीं टूटेगा | अब इसका रहस्य पता चला कि वह बाँध ८०० वर्षों से कैसे जीवित है | विलियम ऐडम ब्रिटेन की संसद में बताता है कि इसे भारत के गुरुकुल ने बनाया है और वह गुरुकुल विशाखापत्तनम के बीच कहीं चला करता था | राजीव दीक्षित - मैं जब इस बाँध को देखने गया और वहां से हैदराबाद लौटा तो archives (ऐतिहासिक आलेखों का संग्रहालय, 'पुरालेखागार') में उसके दस्तावेज मिल गए और गजेट में भी इसके बारे में वर्णन है | विलियम ऐडम कहता है कि भारत के गुरुकुल में पढ़ने वाले विद्यार्थी और उनको पढ़ाने वाले आचार्य इतना अधिक समाज में काम करते हैं, यह बाँध उसका एक नमूना है | राजा बाँध नहीं बनाते, विद्यार्थी और उनके अध्यापक मिलकर बाँध बनाते हैं | विलियम ऐडम लिखता है कि भारत में ऐसे हजारों तालाब गाँव-गाँव में हैं जिन्हें विद्यार्थियों और उनके अध्यापकों ने मिलकर बना दिया, ऐसी हजारों गौशालाएँ हैं, जिन्हें विद्यार्थियों और अध्यापकों ने मिलकर बना दिया गाँवों-गाँवों में; ऐसी हजारों सामाजिक उपयोग की चीजें हैं जैसे – धर्मशालाएँ, कुँए, पानी के रहट - ये सब गुरुकुल के विद्यार्थियों ने गुरुजनों के साथ मिलकर बना दिए | इसलिए विलियम ऐडम कहता है कि भारतीय गुरुकुल केवल विद्या अथवा शिक्षा का केंद्र ही नहीं है, ये गुरुकुल अपने विद्यार्थियों और शिक्षकों के साथ मिलकर समाज के इतने बड़े काम कर रहे हैं, जो वर्षों-वर्षों तक भारत के लोगों के उपयोग में आने वाले हैं; इस तरह की थी हमारी प्राचीन शिक्षा व्यवस्था | अब क्या हुआ? जब भारत की इस शिक्षा व्यवस्था को एक अन्य अंग्रेज अधिकारी मैकाले ने लन्दन में ठीक से वर्णन किया तो लन्दन में ब्रिटेन के सभी सांसदों ने कहा कि यदि ऐसी शिक्षा व्यवस्था भारत में है तो भारत तो बहुत समृद्धिशाली देश है, धनी है, यह हमें समझ में आता है | मैकाले ने ऐसे कई गुरुकुलों का वर्णन किया जो कृषि-विज्ञान सिखाते हैं, कृषि-शास्त्र सिखाते हैं | तमिलनाडु के कई गुरुकुलों का वर्णन है जिसमें कृषि- विज्ञान ऐसा सिखाया जाता है, जहाँ एक एकड़ में ५६ कुन्तल चावल पैदा होता है, उसकी विद्या 'विद्यार्थी' सीखते हैं | आज भारत में जितने भी आधुनिक कृषि विश्वविद्यालय हैं, वे एक एकड़ में ३० कुन्तल से अधिक धान कभी पैदा करके दे नहीं पाए लेकिन १८३५ में विलियम ऐडम कह रहा है कि एक एकड़ में ५६ कुन्तल धान पैदा करना तो सामान्य-सी बात है; ऐसी शिक्षा देने वाले सैकड़ों गुरुकुल भारत में हैं | कुछ कृषि सिखाते हैं, कुछ धातु-विज्ञान सिखाते हैं, कुछ construction engineering (निर्माण कार्य करने वाली इंजीनियरिंग) सिखाते हैं, इसके अतिरिक्त विशेष रूप से आध्यात्मिक-ज्ञान सिखाते हैं, ऐसे १८-२० विषयों का अध्ययन कराने वाले गुरुकुल हैं | विलियम ऐडम कहता है कि भारत सुखी है, समृद्धिशाली है इन गुरुकुलों के कारण |

क्रमशः